



सत्यमेव जयते

जल शक्ति मंत्रालय

जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग,
भारत सरकार

MINISTRY OF JAL SHAKTI

DEPARTMENT OF WATER RESOURCES,
RIVER DEVELOPMENT & GANGA REJUVENATION,
GOVERNMENT OF INDIA

JAL CHARCHA

जल चर्चा

2021
February



“

There is no fixed way to save water. In different regions, different methods are being adopted with the single aim - To conserve every drop of water.

”
-Narendra Modi

Jan Shakti Powering Jal Shakti

Honouring Best Practices in Water Resources Management
with the Recognition of

3rd National Water Awards 2020



Best State



Best Media
(Print/ Electronic)



Best Water
User Association



Best District



Best School



Best Industry for
CSR activities



Best Village
Panchayat



Best Industry



Best NGO



Best Urban
Local Body



Best Institution/ RWA/ Religious organization
for campus usage

LAST DATE OF SUBMISSION HAS BEEN EXTENDED TO 10th MARCH 2021.

For application and more details
Log on to www.mygov.in or cgwb.gov.in

CONTENTS

• From the Chief Editor's Desk	2
• सूरज कुंड	3
• क्षिप्रा नदी	4
• Conservation(MGNREGA)	5
• River Rejuvenation	6
• जल योद्धा	7
• बरगी बाँध	8
• सर्वश्रेष्ठ उद्योग	9
• सर्वश्रेष्ठ धार्मिक संस्थान	11
• Namami Gange	12-13
• पिपरिया गोपाल ग्राम	14
• Know Zone	15
• CSR	16
• 21 st Water Talk	17
• District Initiative	18
• People's Initiative	19
• Campaign	20-21
• News In Brief	22-23
• Snippets	24
• जन की बात	25
• NGO	26
• In Newspaper	27
• Institute	28

Chief Editor : Pankaj Kumar

Editor : Sanjay Awasthi

Co-Editor : Girraj Goyal

Sub-Editor : Mohit Sharma

Design & Comm. Team : Fusion

Corporate

Solutions Pvt. Ltd.

Publisher : B.H.T. Vaiphei

[as Under Secretary (IEC), Ministry of Jal Shakti, Do
WR, RD & GR

Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi -110001]

Printer : Krishna Enterprises

2070/5, Chuna Mandi, Paharganj, New Delhi - 110055



3 सूरज कुंड



5 Conservation (MGNREGA)



8 बरगी बाँध



26 NGO



4 क्षिप्रा नदी



6 River Rejuvenation



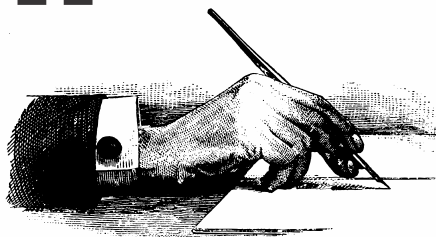
12-13 Namami Gange



28 Institute

Reproduction in any form is prohibited without written permission.
Any dispute related to the content of the magazine should be addressed
to the publisher.

“



From the Chief Editor's Desk



”

It is indeed a pleasure to be associated with a sector that affects all our lives so deeply.

The Department's monthly magazine 'Jal Charcha' not only creates awareness about the activities, schemes and programmes undertaken by various organizations but also facilitates much-needed interaction between stakeholders in the water sector. The aim is to engage both the government and the non-government agencies on the crucial issue of water conservation.

In the February issue of Jal Charcha, in water conservation and river rejuvenation, interesting accounts of cleaning sewage water using 'Seechewal Model' in a Punjab village and cleaning of stretches of 14 rivers/rivulets in Bilaspur have been shared in this issue. The story of a 20-year-old water warrior who has been working tirelessly to conserve water and rejuvenate water bodies is truly inspirational.

Remarkable stories of winners of 2nd National Water Awards in categories like Best Religious Institution, Gram Panchayat, CSR, Industry, School, NGO etc. have also been included. Their commitment towards the cause of water conservation shows us that a lot of good work is being done in various parts of the country and motivates us to do our bit in this endeavour.

On the awareness generation front, two events have been successfully organized in the past few days - Brahmaputra Aamantran Abhiyan and World Wetland Day. While the Brahmaputra Aamantran Abhiyan, which concluded in January, aimed at inculcating the concept of 'Living with the River' in the younger generation, the World Wetland Day was observed to raise awareness about the conservation of wetlands. Hon'ble Minister of Jal Shakti graced both the events with his presence.

I am confident that the content of this issue of 'Jal Charcha' will inspire you to play your part in making the Jal Shakti Abhiyan into a Jan Shakti Abhiyan as envisioned by Hon'ble Prime Minister.



Warm Regards

Pankaj Kumar
(Pankaj Kumar)

फरीदाबाद की जल धरोहर : सूरजकुंड

सूरजकुंड एक ऐसा स्थान है जिससे देश के अधिकतर लोग परिचित हैं। इसका नाम सुनते ही मेले के सुन्दर, रंग-बिरंगे चित्र स्वयं ही दृष्टिगत हो जाते हैं। यह एक ऐसा मेला जहाँ भारत के सभी रंग एक साथ देखने को मिलते हैं। जल चर्चा के इस अंक में हम आपको इस मेले की विशेषता के बारे में बता रहे हैं। इस अंक में हम आपको सूरजकुंड मेला नहीं बल्कि सूरजकुंड की ऐतिहासिक धरोहर के बारे में बताएँगे।

इसके नाम से ही स्पष्ट होता है कि यह एक कुंड है जो समृद्ध भारतीय जल संरक्षण परंपरा का परिचायक है। सूरजकुंड दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के फरीदाबाद में स्थित एक प्राचीन धरोहर है। यह दक्षिणी दिल्ली से लगभग 8 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। अरावली पहाड़ियों के आँचल में स्थित यह कुंड अर्धवृत्त आकार का है जो किसी सभागार या एम्फीथिएटर जैसा भी प्रतीत होता है। इस कुंड का कुल क्षेत्रफल लगभग 6 एकड़ है व जलाशय के कुंड की चौड़ाई लगभग 130 मीटर है। इस कुंड का निर्माण 10 वीं शताब्दी में तोमर वंश के राजा सूरज पाल ने करवाया था। 10वीं शताब्दी के तोमर कुल में सूर्य देव की उपासना की जाती थी, इसी कारण राजा सूरज पाल ने पूजा अर्चना करने के लिए कुंड का निर्माण करवाया जिसे स्वाभाविक रूप से सूरजकुंड के नाम से जाना गया। ऐसा माना जाता है कि राजा ने कुंड के पश्चिमी छोर पर एक सूर्य मंदिर भी बनवाया था।

एक नज़र में यह कुंड एक सभागार जैसा ही प्रतीत होता है क्योंकि इसके चारों तरफ गोलाकार में सीढ़ियाँ बनाई गई हैं और बीच में खाली मंच जैसा सपाट मैदान है। दरअसल यह खाली मैदान ही मुख्य जलाशय का तल है, यानी पानी का सबसे निचला तल और यहाँ तक सीढ़ियों की सहायता से आसानी से पहुँचा जा सकता है। आज यह हमें देखने में बेशक किसी सभागार जैसा ही लगे परन्तु हकीकत में यह एक सुनियोजित जलाशय है जिसे आसपास के क्षेत्र की जल संबंधी आवश्यकताओं के उद्देश्य से बनवाया गया था। इसी स्थान पर पहले तोमर वंश की राजधानी हुआ करती थी और इसी कुंड से राजधानी की जलापूर्ति की जाती थी। सूरजकुंड में जल आपूर्ति बनाए रखने के लिए इसे एक छोटी नदी से जोड़ा गया है, जो कुछ दूरी के बाद अनंग बांध से जुड़ी हुई है। इसे इसलिए ही नदी से जोड़ा गया होगा ताकि अतिप्रवाह के समय भी बेहतर जल प्रबंधन किया जा सके।

ब्रिटिश शासन काल के समय भी इस कुंड को जल के एक मुख्य स्रोत के रूप में प्रयोग किया जाता था। पुराने समय में यहाँ तक माना जाता था कि केवल सूरजकुंड के जल से ही पूरी दिल्ली की आबादी की जल संबंधी आवश्यकताओं को पूरा किया जा सकता है। वाकई यह कुंड एक संपन्न व समृद्ध परंपरा का उदाहरण ही है। आज से हजार साल पहले निर्मित यह उत्तम जलाशय आज की नवीन भंडारण तकनीकों को भी चुनौती देता है। हमारा आप से अनुरोध है कि जब आप अगली बार सूरजकुंड जाएँ तो केवल मेले की चमक-दमक ही से मंत्रमुग्ध हो कर न रह जाएँ, बल्कि 2 पल ठहर कर अपने देश की समृद्ध जल परंपरा के प्रतीक सूरजकुंड के बारे में भी अवश्य सोचें।



क्षिप्रा नदी

क्षिप्रा नदी, भारत की एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक नदी है। इसे शिप्रा नदी के नाम से भी जाना जाता है, इसका नाम ही इसकी शुद्धता का प्रतीक है। इस नदी का उद्गम मध्य प्रदेश के धार जिले में महू छावनी से लगभग 17 किलोमीटर दूर जानापाव की पहाड़ियों से होता है। यह नदी धार जिले के बाद मालवा के पठार से होकर बहते हुए मध्य प्रदेश-राजस्थान सीमा के समीप चंबल नदी में मिल जाती है। इसकी प्रमुख सहायक नदियां 'खान' और 'गंभीर' हैं।

क्षिप्रा ऐतिहासिक दृष्टि से तो महत्वपूर्ण है ही, साथ ही साथ इसकी पौराणिक महत्ता भी बहुत अधिक है। केवल हिन्दू ही नहीं बल्कि बौद्ध व जैन धर्म में भी इस नदी को पवित्र बताया गया है व इसके स्नान के महत्व को माना गया है। ऐसा माना जाता है कि भगवान विष्णु के अवतार भगवान परशुराम का जन्म इसी स्थान पर हुआ था। उज्जैन नामक पावन नगर क्षिप्रा नदी के किनारे ही बसा हुआ है जहां हर 12 वर्षों में सिंहस्थ/कुम्भ मेले का आयोजन होता है। महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर भी उज्जैन में ही स्थित है। क्षिप्रा नदी के किनारे ऋषि संदीपनी का 5000 वर्षों से अधिक प्राचीन आश्रम भी है जहां कंस के वध के पश्चात भगवान श्री कृष्ण ने बलराम दाऊ और सुदामा के साथ शिक्षा ग्रहण की थी। कहा जाता है कि 64 दिनों के प्रवास के दौरान श्री कृष्ण ने 64 विद्याओं और 16 कलाओं की शिक्षा प्राप्त की थी।

क्षिप्रा नदी पर 'नर्मदा-क्षिप्रा सिंहस्थ लिंक परियोजना' वर्ष 2015 में पूर्ण हुई थी जिसके द्वारा नर्मदा नदी के जल को क्षिप्रा नदी में पाइप लाइन के माध्यम से मिलाया जाता है। यह परियोजना नर्मदा- मालवा लिंक परियोजना का प्रथम चरण है।



Sewage Water in Badhochhi Kalan Village Cleaned Using 'Seechewal Model'

Situated in Fatehgarh Sahib district of Punjab, the Badhochhi Kalan village faced acute problem of contaminated water due to accumulation of garbage, mud, oil and grease in the pond during rainy seasons. The contamination of water in the pond also polluted the nearby water bodies making it

difficult for the farmers to get water for agriculture. Moreover, the contaminated water would emit stench and became a breeding ground for mosquitoes and flies. Even as periodic manual cleaning proved ineffective, an idea was mooted to develop the site on the "Seechewal model" for treating sewage water and using it for irrigation, as a pilot project.

"Seechewal model" which was written about in this magazine, involves constructing drains with filter mesh at household level to stop waste from entering into the main drain. This wastewater is collected in a big drain with a filter mesh and further connected to other three wells. The inlet and outlet pipes in each of the wells are designed and placed in such a manner that there is constant rotation of water due to gravity, which separates out waste. In the first well, all the heavy particulate matter gets deposited at the bottom, and the rest of the water gets transferred to the next well. In the second well, all the light particulate matter comes out and the clean water gets transferred to the third well, which then goes to the pond. The water collected in the pond is cleaned by sun rays. The main advantage of the "Seechewal model" is its compactness and cost-effectiveness. To clean the pond in the Badhochhi Kalan village, the residents contributed in terms of fund and labour as well as maintenance of the project by keeping their sewers



clean. The work was done in 2018 with the help of Mahatma Gandhi NREGA and RURBAN funds in convergence with 14th Finance Commission Funds through the Gram Panchayat Badhochhi Kalan involving an expenditure of Rs. 35.83 lakh.

By laying down a proper sewerage system, open drainpipes are done away with, reducing the problem of flies and mosquitoes. The sewerage system has also helped in the reduction of flood in the school situated next to the pond. Water in the pond has been tested for biological oxygen demand (BOD) and total dissolved solids (TDS) and the levels were found to be safe for irrigation. The farmers using this treated water reported reduction in urea usage in fields, benefitted around 350 households have been. The use of treated water for irrigation has also reduced the extraction of groundwater.

"I use this treated water for irrigation. The use of urea has reduced a lot. Earlier I had to put three bags (150 kg) urea per acre, but now only one bag (50 kg) is enough. The water from the pond is nearly sufficient. While earlier I had to pump groundwater for irrigation all 7 days of the week, now I just do it once as my requirements are fulfilled through water from the pond," said Shri Rajesh Singh, a farmer in the village.

While Seechewal model has been hailed by experts from all quarters, the emulation of the model in another village is a welcome sign with respect to water conservation in the state of

Punjab which has witnessed drastic fall in groundwater levels in the past few years.



Stretches of 14 Rivers/Rivulets Revived in Bilaspur, All-Round Benefits for the Region

In a remarkable achievement, out of total 2352.56 kilometer length of rivers and rivulets/nallas, 1,146.90 kilo meter has been revived by the Bilaspur district administration in Chattisgarh through community participation. In the process 284 water- storing structures were constructed that include assets under various irrigation schemes. The impact of these efforts has been such that an additional storage capacity of 396.526 million cubic meter has been created and the region has become water rich. An additional crop production (paddy yield) during kharif season of 4,89,851.25 million tonnes is now accrued every year. For their efforts, the district administration was given the first prize in the Revival of Rivers category (East Zone) at the 2nd National Water Awards instituted by the Department of Water Resources, River Development and Ganga Rejuvenation, Ministry of Jal Shakti. The district administration achieved another milestone by planting 21,29,662 trees in the catchment areas in 2019-20. With the help of NGOs, agricultural experts/scientists and social workers, training and awareness programmes were organised for farmers regarding optimum use of water for maximum production at minimum cost and benefits of Per Drop More Crop by adopting drip irrigation systems. Presently, 480 hectares of area is under construction with solar micro irrigation system (drip system) and about 500 hectares area is to be developed in the next two years. The details of the rivers/rivulets and structures constructed are in the box:

Name of the River/Nalla	Total Length of the River in the District	Total Length of Stretch Revived	No. of Structures Constructed
Kharung River	40.60	40.60	13 (1 major irrigation project and 12 anicuts)
Seonath River	62.80	62.80	5 anicuts
Lilagar River	97.60	82.50	13 anicuts
Arpa River	162.56	54.00	17 (4 minor irrigation projects and 13 anicuts)
Son River	78.00	60.00	12 (4 minor irrigation projects and 8 anicuts)
Maniyari River	62.00	62.00	8 (2 minor irrigation projects and 6 anicuts)
Ghangha Nalla	79.00	41.00	12 (1 medium and 1 minor irrigation projects and 10 anicuts)
Gokne Nalla	42.00	20.00	5 anicuts
Tungan Nalla	38.00	11.00	3 (1 minor irrigation project and 2 anicuts)
Narmada Nalla	32.00	14.00	3 (2 minor irrigation projects and 1 anicut)
Chanpi Nalla	52.00	28.00	3 (2 minor irrigation projects and 1 anicut)
Allan Nalla	64.00	37.00	4 (2 minor irrigation projects and 2 anicuts)
Jevas Nalla	37.00	16.00	5 (2 minor irrigation projects and 3 anicuts)
Local Nalla	1505.00	618.00	(145 minor irrigation projects and 36 anicuts)



Dagori Anicut



Training & Awareness Programme for the use of Drip irrigation system

Water Warrior of Tamil Nadu

At a young age of 12, Mr. N. Manikandan experienced the challenges due to lack of water in the absence of enough pipelines to meet the water requirements of every household. Foreseeing the need to conserve water, he started putting his efforts in the direction of water conservation. For his success story, Mr. N. Manikandan was awarded the first prize in Water Warrior (South Zone) category in the 2nd National Water Awards.

Mr. N. Manikandan has played a major role in the formation of several small NGOs that have been working towards water conservation and rejuvenation of water bodies in different parts of Tamil Nadu. At a very young age of 20 years, he formed Bharat Vizhuthugal Narpani Eyyakkam in Coimbatore District of Tamil Nadu that has been working towards rainwater harvesting, tree

plantation, construction of low cost houses and desilting of sewage drains. To rejuvenate the Kurichi Kulam Lake in Coimbatore that receives water from the Noyyal River catchment, an NGO called Kurichi Kulangal Pathukkappu Eyyakkam was also formed. To revive the Noyyal River that contributes to the commercial and cultural development of Coimbatore, 17 volunteers came together under the initiative taken by Mr. Manikandan, and Kovai Kulangal Padhugappu Amaippu (KKPA – Coimbatore Lake Protection Organization) was formed.

On the inception of the NGO KKPA in 2017, volunteers were invited through social media, and many works of water conservation were taken up. Perur Lake, Kuniyamuthur Canal (that supplies water to the four lakes of Perur) Sottaiandikuttai, Sengulam and Kuniyamuthur, and Sengulam Lake were cleaned, desilted, and deepened. KKPA volunteers have also planted more than 4500 native trees.

Like any new venture, Mr. Manikandan also faced problems in getting local support and mobilising new volunteers. However after gradually observing the changes and the benefits acquired from their work, many volunteers, college students and general public also joined the group. The team also shares the positive changes on

social media platforms to motivate new volunteers. Special awareness campaigns were also organized on special occasions such as World Environment Day, World Water Day, World Wetland Day, Earth Day etc. His strong leadership, proper planning and the support of a group of young enthusiastic, like-minded and dedicated volunteers helped to transform communities into water resilient ones.

Mr. Manikandan says. “Our ancestors were very aware in keeping lakes and water ways clean for usage for humans as well as animals. They took pains to de-silt and maintain all lakes and canals under their management. However, these local water resources are becoming polluted, encroached with human settlements, and are being used as dumping grounds. The canals supplying water to these

lakes also fell into disorder. Hence, it is imperative that each one of us start the process of saving

water, developing rainwater harvesting facilities within our household, cleaning, desilting and maintaining our local water bodies, planting beneficial trees, reduce usage of plastic, household waste management, re-use of grey water for agriculture and maintain a clean environment.”

இதயத்தின் ஈரம் கொண்டு மண்ணின் ஈரம் காப்போம்...!
(Let's conserve moisture of soil with moisture of heart)



बरगी बाँध

बरगी बाँध मध्य प्रदेश में जबलपुर शहर से लगभग 25 किलोमीटर दूरी पर नर्मदा नदी पर स्थित है। इस बाँध का निर्माण वर्ष 1988 में करवाया गया था। यह मिट्टी और कंक्रीट से निर्मित बाँध है। इस बाँध के जल का उपयोग मुख्यतः सिंचाई, बिजली उत्पादन और अन्य जल आपूर्ति आवश्यकताओं हेतु किया जाता है। बरगी बाँध के जलाशय से रानी अवन्ति बाई लोधी सागर परियोजना हेतु 197 किलोमीटर लंबी, दायाँ तटीय नहर के माध्यम से नर्मदा के जल का विपथन किया जाता है। इस परियोजना का संचालन और रखरखाव “नर्मदा वेली डेवलपमेंट अथॉरिटी” द्वारा किया जाता है। नींव के निम्नतम बिंदु से बाँध की अधिकतम ऊंचाई 69.80 मी है और इसकी लंबाई 5,357 मी है। जलाशय की सकल भंडारण क्षमता 3920.00 Mm³ है। इस बाँध के जलाशय का फैलाव क्षेत्र 267.97 वर्ग किमी (km²) है तथा इसका अधिकतम जल स्तर 425.70m है। इसमें ओगी स्पिलवे प्रकार के 13.715 m x 15.25 m साइज़ के 21 रेडियल गेट्स हैं। स्पिलवे के माध्यम से 43617 m³/s की बाढ़ की निकासी की जा सकती है।

बरगी बाँध जबलपुर शहर के समीप प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों में से एक है। मध्य प्रदेश टूरिज्म का “मैकाल रिजॉर्ट” बरगी बाँध पर ही बना हुआ है जो पर्यटकों के लिए आकर्षण का एक मुख्य केंद्र है। बाँध के जलाशय में बोटिंग, वॉटर स्कूटर आदि की सुविधा भी है जो बरगी की यात्रा को और मजेदार बनाती है। इसके अलावा मैना, परथा, सारस, कबूतर और लोकल काली गौरैया जैसे पक्षी भी बाँध के निकट आसानी से देखे जा सकते हैं। बाँध के निकट स्थित शहर जबलपुर भी पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यहाँ स्थित वीरांगना गोण्ड रानी दुर्गावती से संबन्धित स्मारक व संग्रहालय भी दर्शनीय हैं। वर्तमान जबलपुर रानी दुर्गावती के राज्य का केन्द्र था। जबलपुर में स्थित रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय भी इन्ही वीरांगना रानी के नाम पर है।



जानिए जल संरक्षण में सर्वश्रेष्ठ अरविन्द लिमिटेड संतेज उद्योग के बारे में

अरविन्द लिमिटेड संतेज देश की सबसे बड़ी वस्त्र उत्पादक व निर्यातक कम्पनियों में से एक, लालभाई समूह की फ्लैगशिप कम्पनी है। इसकी स्थापना वर्ष 1998 में हुई थी। इस उद्योग के मालिक श्री संजय लालभाई हैं और इसकी मुख्य उत्पादन यूनिट गांधीनगर के जिले कलोल में स्थित है। इस कम्पनी में 11,000 से भी अधिक कर्मचारी काम करते हैं। अरविन्द लिमिटेड संतेज को जल संरक्षण के क्षेत्र में जल शक्ति मंत्रालय द्वारा पुरस्कृत किया गया है और इनकी जल संरक्षण की पहल वाकई सराहनीय हैं। इस लेख में हम आपके साथ जल संरक्षण की वह दिलचस्प तकनीकें साझा कर रहे हैं।



‘जल ही प्रकृति की सबसे बड़ी संचालक शक्ति है (water is the driving force of nature) के मंत्र को मानते हुए ही इस उद्योग के परिसर को पूरी तरह जल संरक्षण के अनुकूल बनाया गया है। इनकी पहल के कारण भूमि या फिर जल में किसी भी प्रकार औद्योगिक अपशिष्टों का निर्वहन नहीं होता है। अपशिष्ट जल का उपचार कर इस पुनरुपयोग के योग्य बनाया जाता है। यह एशिया का सबसे बड़ा जीरो लिक्विड डिस्चार्ज प्लांट है। न्यूनतम परिचालन संबंधी परेशानियों के समाधान हेतु अस्वच्छ जल के विनियोजन की कार्यप्रणाली विकसित की गई है। बायो गैस के इस्तेमाल को बढ़ावा देने हेतु स्लज डाइजेस्टर स्थापित कराए गए हैं। इन स्लज डाइजेस्टर की सहायता से कीचड़ से बायो गैस बनाई जाती है। इस बायो गैस का उपयोग सीधे कैंटीन क्षेत्र में किया जाता है।

उच्च दक्षता वाले रिवर्स ऑस्मोसिस तकनीक के माध्यम से भी अपशिष्ट जल का उपचार किया जाता है। इस प्रक्रिया से बने कंडेंस पानी को बॉयलर के ड्रम में हीट सोर्स और साल्ट के रूप में इस्तेमाल किया जाता है, जो कपड़े की रंगाई के लिए प्रयोग में लाया जाता है। आर्द्रिकरण, बायलर व कूलिंग टावर इत्यादि जैसे विभागों में भूजल के इस्तेमाल की जगह सीवेज उपचारित जल का उपयोग किया जाता है। कारखाने के

परिसर में ही सीवेज प्रबंधन की व्यवस्था की गई है। इस उपचारित जल का प्रयोग बागवानी व अन्य आवश्यकताओं हेतु भी किया जाता है।

अपने कर्मचारियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाने हेतु कम्पनी द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित कराए जाते हैं। यह जागरूकता बढ़ाने की पहल केवल कर्मचारियों और सदस्यों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि आसपास

के गाँवों के लोगों को भी जागरूक करने की कोशिश लगातार की जा रही है। प्रत्येक वर्ष उद्योग में काम कर रहे लोगों के साथ-साथ आसपास के गाँवों में व्यक्तियों को शिक्षित करने के लिए विश्व पर्यावरण दिवस मनाया है। उत्पादन बनाम आपूर्ति अनुपात को बेहतर समझने के लिए उद्योग में दैनिक जल खपत रिपोर्ट को भी मॉनिटर किया जाता है। इस रिपोर्ट के माध्यम से जल की खपत को और कम करने में सहायता मिलती है। अधिकतम उपयोग और शून्य अपव्यय के बारे में उपयोगकर्ताओं को जागरूक करने हेतु जल लागत व खपत इत्यादि पर भी समय-समय पर चर्चा आयोजित कराई जाती है। प्रत्येक जल उपलब्ध कराने वाले स्थानों पर जल संरक्षण से संबंधित आदर्श वाक्य लिखे गए हैं। यह सुनने में छोटी सी पहल हो सकती है परन्तु इसका प्रभाव एक बड़े समूह पर पड़ता है।

इस उद्योग को जल व पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण पुरस्कारों से सम्मानित किया गया जिसमें एफआईसीसीआई (FICCI) और सीआईआई (CII) जैसी अहम संस्थाओं के पुरस्कार भी सम्मिलित हैं। अरविन्द लिमिटेड संतेज द्वारा जल संरक्षण के क्षेत्र में किए जा रहे सभी कार्य सराहनीय हैं और अन्य उद्योगों के लिए मील के पथर के समान हैं। अंततः यह कहना गलत नहीं होगा कि यह उद्योग इस बात को साबित कर रहा है कि विकास और पर्यावरण को एक साथ ले कर भी उन्नति की राह पर चला जा सकता है।

जल संरक्षण में सर्वश्रेष्ठ 'सत्संग'

सत्संग झारखंड के देवघर जिले में स्थित एक धार्मिक संस्थान है जो अपने सामाजिक, सांस्कृतिक व आध्यात्मिक उपदेशों के साथ-साथ जल संरक्षण की पहल के कारण लोगों के बीच प्रसिद्ध है। इस संस्थान में परम प्रेममयी श्री श्री ठाकुर अनुकुलचंद्र के उदात्त उपदेशों के माध्यम से प्रेम और सम्मान की साधना का सन्देश लोगों तक पहुंचाया जाता है। यहाँ परिसर में 2,500 लोग रहते हैं और प्रतिदिन लगभग 3,000 तीर्थयात्री यहाँ दूर-दूर से उपदेश सुनने, प्रार्थना करने और ध्यान लगाने के लिए आते हैं। सत्संग की सबसे खास बात यह है कि यहाँ आए तीर्थयात्री केवल श्री श्री ठाकुर जी के उपदेशों को ही नहीं, बल्कि जल संरक्षण की सीख भी अपने साथ ले कर जाते हैं। सत्संग को जल शक्ति मंत्रालय द्वारा आयोजित 'राष्ट्रीय जल पुरस्कारों' में जल संरक्षण के प्रयासों के कारण पुरस्कृत भी किया गया है।

वर्ष 2010 में सत्संग आश्रम में एक सर्वेक्षण हुआ था जिसमें यहाँ की मिट्टी हाइड्रो-जियोलाॉजिकल जानकारी के अनुसार रेतीली पाई गई थी। यहाँ के निवासियों के लिए पानी के कुल स्रोत 50 खुले कुएं, एक तालाब, 10 हाथ पंप और 05 बोर वेल थे। सर्वेक्षण में पाया गया कि यहाँ इन जल स्रोतों के अतिरिक्त पाइप के जल की कोई व्यवस्था नहीं है। इन जल स्रोतों में से लगभग 90% गर्मियों में सूख जाते थे जिस कारण यहाँ जल की कमी हो जाती थी। ऐसी जल अभाव की परिस्थितियों में परिसर के निवासियों और तीर्थयात्रियों हेतु जल की आपूर्ति टैंकरों के माध्यम से की जाती थी।

इस पूरे क्षेत्र का निरीक्षण 'अर्थ फाउंडेशन' की टीम द्वारा किया गया और 50 एकड़ क्षेत्र में वर्षा जल संचयन व अन्य जल संरक्षण तकनीकों को विकसित करने के सुझाव को प्रस्तावित किया गया और वर्ष 2012 से यह कार्य शुरू भी हो गया। सत्संग आश्रम में छत आधारित वर्षा जल संचयन प्रणाली से प्रति वर्ष 3,44,65,000 लीटर जल संरक्षित किया



जाता है। यहाँ लगातार यह प्रयास किया जा रहा है कि वर्षा की एक भी बूँद को व्यर्थ ना जाने दिया जाए और इसलिए संपूर्ण वर्षा जल को एकत्र किया जा रहा है। सभी इमारतों की छत से एकत्रित किए गए जल को अनिवार्य वैज्ञानिक मानकों के अनुसार कुएं में संचित किया जाता है।

बेहतर जल प्रबंधन और भूजल पुनर्भरण हेतु पूरे सत्संग क्षेत्र की सतह के अपवाह को पुनर्भरण कुओं (recharge well) की तरफ डाइवर्ट किया गया है जिसका आयाम 20 फीट X 5 फीट है।

परियोजना की प्रभावकारिता के लिए समय-समय पर इन पुनर्भरण कुओं के लिए उपयुक्त जगहों की पहचान की जाती है। आश्रम परिसर में ग्रे वाटर के पुनरुपयोग को बढ़ावा देने के लिए ग्रे वाटर ट्रीटमेंट की व्यवस्था की गई है। यहाँ प्रतिदिन 20,000 लीटर जल को उपचारित किया जाता है। जल संरक्षण के साथ-साथ स्वच्छ जल सुनिश्चित करने हेतु पानी के सभी स्रोतों की आवधिक स्वास्थ्य जांच कराई जाती है। यह क्षेत्र पूरी तरह खुले में शौच मुक्त क्षेत्र (open defecation free) है। आश्रम के परिसर में यह भी सुनिश्चित किया जाता है कि किसी भी पाइप से पानी का रिसाव न हो क्योंकि यह जल अपव्यय के मुख्य कारकों में से एक है।

पिछले कुछ वर्षों में देखा गया है कि अधिक से अधिक तीर्थयात्री और अन्य यात्री भी आश्रम की वर्षा जल संचयन प्रणाली को देखने के लिए सत्संग की ओर आकर्षित होते हैं। इससे लोग अपने आम जीवन में भी वर्षा जल संचयन जैसी जल संरक्षण की तकनीकें अपनाने के लिए प्रेरित होते हैं। निवासियों और तीर्थयात्रियों को नियमित रूप से सत्संग के माध्यम से जल संचयन और प्रबंधन के विषय पर जागरूक किया जाता है। आज पूरा विश्व जल संकट से जूझ रहा है परन्तु ऐसे में सत्संग आश्रम जैसे प्रयास आशा की एक किरण के समान हैं।



'Catch the Rain' Webinar Series

In the month of January 2021, the 17th edition of the weekly webinar series with District Magistrates/Deputy Collectors/Deputy Commissioners was organised on January 9th by National Water Mission (NWM) in association with APAC Digital News Network. In the edition, three officials from the districts and one member of civil society participated. The edition was chaired by Shri G. Asok Kumar, Additional Secretary and Mission Director, NWM.

Sh. M.S. Tanwar began by informing the audience about the dependency of Ghaziabad region on groundwater which prompted the administration to focus on both demand side and supply side management. In view of this, 46 water bodies which had been encroached upon and turned into dump yards were identified for revival. In phase-I, the work on 10 water bodies was undertaken as part of which clean-up, water quality management, rainwater harvesting, afforestation etc. were done. A concept – Jan Chaupal to Jal Chaupal – was started to raise awareness. Waste-to-Art project was also initiated to reduce the amount of garbage going to the landfill among other works.

Shri Indrajeet Chandrawal talked about NARUWA initiative being undertaken in the region with objectives of environment conservation, water conservation, sustainable farming, promotion of livelihood and boosting economy. As part of the works, 40368 trenches spanning 73 gram panchayats were excavated and geo-tagged in addition to plantation of over 10000 trees. Besides, various water holding structures were constructed in the district. The impact of the works was such that the water table in one of the villages – Dhodrepal – rose by 4 meters thereby generating revenue of 20 lakh by producing 53 tons of vegetables. Katha Lagau Buta (Let's plant together) initiative across the Indravati river now protects the bund from overflowing river. Also, more than 70 'Paani Samitis' have mobilized the people for the sustenance of the structures through asset ownership.

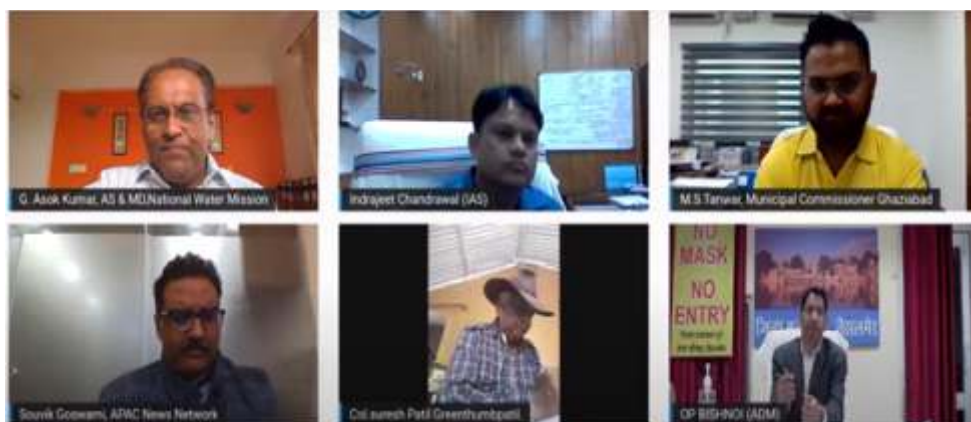
Shri O.P. Bishnoi, ADM, Jaisalmer informed that the rainfall in the district this year has been very good at 350 mm and not a single drop of water was allowed to go out of district, which is always the need-of-the-hour in the

desert areas. He called the people living in deserts as role models for water conservation and said that just following the solutions they have developed over generations are enough to ensure water

- **Concepts like Jan Chaupal to Jal Chaupal and Waste-to-Art were discussed**
- **Initiatives like NARUWA in Chattisgarh were explained**
- **ADM Jaisalmer talked about the importance of traditional water bodies**

security in these areas. He added that traditional water bodies like step wells, talabs, nadis play an important role in meeting the water requirement of the region.

Col. Suresh Patil, who runs Green Thumb NGO in Pune, spoke about the work his organisation has been doing at the ground level. He informed the audience that in the last 10 years, more than 25 lakh truck load of silt has been removed from the dams resulting in "cascading benefits". He said that the silt is given to the farmers who use it for various purposes. Apart from the CSR funding, his organisation teams up with about 250 Ganpati Mandals, schools and colleges to carry out the works through people's participation. He claimed that the removal of silt itself has solved the water problem of Pune to a large extent.



The participants included Shri M.S. Tanwar, Municipal Commissioner, Ghaziabad, Uttar Pradesh, Shri Indrajeet Chandrawal, District Magistrate, Bastar, Chattisgarh, Shri O.P. Bishnoi, ADM, Jaisalmer, Rajasthan and Col. Suresh Patil of Green Thumb organisation.

Massive Scientific and Community based programs launched on World Wetland Day 2021



National Mission for Clean Ganga (NMCG), Ministry of Jal Shakti and India Water Foundation (IWF) celebrated World Wetland Day 2021 on 2nd February to raise awareness about conservation and rejuvenation of wetlands.

The World Wetland Day theme this year shone a spotlight on wetlands as a source of freshwater and encouraged actions to restore them. Highlighting the interconnectedness of all water bodies and their role in maintaining each other's Aviralta (e-flow) and Nirmalta (cleanliness), Shri Gajendra Singh Shekhawat, Union Minister of Jal Shakti said, "Namami Gange is the first of its kind program where Wetland Conservation is integrated with Basin Management Plan." He added, "The innovative work done by NMCG for wetland conservation linked to River Rejuvenation would help entire country as a model framework". He said that all the stakeholders have to act as custodians of environment for creating a sustainable future. On the occasion, a massive scientific and community-based program to develop health care and management of 10 wetlands in Ganga districts was launched.

Shri Rattan Lal Kataria, Minister of State, Jal Shakti while emphasising the integral role of wetlands in socio-ecological system said, "Wetlands are very important for maintaining the country's biological diversity." He said that a lot of information is available on wetlands, regulatory frame work is also present, but there is a need to strengthen them at the grassroots level and raise awareness among the people.

Shri Pankaj Kumar, Secretary, Ministry of Jal Shakti said that the awareness about wetlands has increased in recent times and NMCG not only looks at rejuvenation of Ganga but overall river basin, including its cities and their wetlands. He said that events like World Wetland Day encourage us to continue working with a holistic approach. Shri Rajiv Ranjan Mishra, Director General, NMCG added that it is not just a celebration but a call for action to conserve wetlands and that is why capacity building

workshops for wetland conservation were organised. Mr. Mishra shared that a futuristic guideline for monitoring of Ramsar sites and wetlands through Wildlife Institute of India and support of Ministry of Environment, Forest and Climate Change is being developed.

An innovative attempt to develop guidelines for protection and conservation of Urban Wetlands by NMCG with the help of the prestigious School of Planning and Architecture in the form of a toolkit called, 'Urban Wetlands/Water Body Management Guideline - A Toolkit for Local Stakeholders' was released at the event. 'Framework for Ecological Monitoring of Ramsar Sites and Other Wetlands in India' was also released. A quiz on Wetlands organized by NMCG also received enthusiastic participation throughout India and winners were announced during the event. Posters for spreading awareness on wetlands by WWF-India were unveiled by the guests.

Wetland Day celebrations kick started on 1st February 2021 with a series of workshops on various aspects of wetland rejuvenation and conservation designed by WWF-India in association with NMCG for District Ganga Committees. Similar capacity-building workshops in association with Wildlife Institute of India (WII) were organized on 3rd February 2021 for Ganga Praharis, Ganga Doots, Ganga Vichar Manch, professors, teachers and students by Wildlife Institute of India.

Numerous programs were organised by volunteers and independent organisations in Ganga Basin to engage with communities and sensitize them towards wetlands which includes events at Asan conservation reserve, Jhilmil Jheel Conservation Reserve etc.



NAMAMI GANGE



Sh. Gajendra Singh Shekhawat, Union Minister for Jal Shakti chaired the consultative workshop meeting with developers and stakeholders of Hybrid Annuity Mode (HAM) on 28th January 2021. Sh. Rajiv Ranjan Mishra, DG, NMCG, Sh. Rozy Agarwal, ED (Finance), Sh. Ashok Kumar Singh, ED (P), NMCG and other officials were also present. The meeting was also joined by senior functionaries from contractors, concessionaires, banking and investment fraternity, SPMGs and executing agencies. The discussions centered on the implementation of HAM projects and the need for improving the process.



Sh. V K Mishra, MD & CEO, Petronet LNG Ltd. met Sh. Rajiv Ranjan Mishra, DG, NMCG and Sh. Rozy Agarwal, ED (F), NMCG and presented a cheque of Rs. 1.50 crore for Clean Ganga Fund under CSR contribution.



12 जनवरी को स्वामी विवेकानंद जी के जन्मदिन के अवसर पर चौसा, बक्सर के बालिका उच्च विद्यालय में गंगा नदी व जैव विविधता संरक्षण विषय पर संगोष्ठी आयोजित कर छात्राओं को जलीय जीवों के बारे में विस्तार पूर्वक बताया गया एवं फोटो प्रदर्शनी के माध्यम से जीवों की पहचान कराई गई।



Sh. U.P. Singh, Secretary, Department of Water Resources, River Development and Ganga Rejuvenation chaired the technical virtual meeting on 20th January with all nodal officers, GIZ and EU delegation to discuss the nine Priority Areas of Phase I of India-EU Water Partnership and way forward to Phase II.



22 जनवरी, 2021 को श्री राजीव रंजन मिश्रा जी, महानिदेशक, राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन, जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा नमामि गंगे कार्यक्रम के अन्तर्गत गंगा नदी की स्वच्छता एवं संरक्षण हेतु क्रियान्वित एवं पूर्ण परियोजनाओं का स्थलीय निरीक्षण किया गया। निरीक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत महानिदेशक महोदय द्वारा सर्वप्रथम चंद्रेश्वर नगर, मुनि की रेती में निर्मित 7.5 एम.एल.डी. सीवेज शोधन संयंत्र, तत्पश्चात हरिद्वार में निर्मित चण्डी घाट रिवर फ्रन्ट डेवलपमेंट परियोजना, हर की पैड़ी जीर्णोद्धार परियोजना एवं जगजीतपुर, हरिद्वार में निर्मित 68 एम.एल.डी. सीवेज शोधन संयंत्र का स्थलीय निरीक्षण किया गया।



Sh. Rajiv Ranjan Mishra, Director General, National Mission for Clean Ganga (NMCG), met Padma Bhushan Dr Anil P Joshi on 29th January 2021 and discussed various aspects of Ganga Rejuvenation and model frameworks for it. Sh. Mishra honoured Sh. Anil Joshi by presenting him the book 'Rowing Down the Ganges'.



#राष्ट्रीय_बालिका_दिवस 2021 की पूर्व संध्या पर नमामि गंगे परियोजना के अंतर्गत जनपद मेरठ में 25 जनवरी को गंगा ग्राम नंगला गोसाई में गंगादूतों और ग्राम की बालिकाओं ने गंगा संरक्षण तथा डॉल्फिन व जलीय जीवों के संरक्षण विषयों पर चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन कर ग्राम वासियों को जागरूक किया।



Shri Prahlad Singh Patel, Minister of State for Culture chaired a meeting on 15th January 2021 to discuss the 'Tourism Interventions in Arth Ganga.' The meeting was attended by Sh. Rajiv Ranjan Mishra, DG, NMCG and other officials of the Ministry of Tourism.



Sh. Rajiv Ranjan Mishra, DG, NMCG visited the odourless Sewage Treatment Plant (STP) which has been set up by IIT-Roorkee and is located within the campus. He appreciated the work done by the officials in setting up the STP and maintaining it.

पिपरिया गोपाल ग्राम पंचायत को जल संरक्षण के लिए मिला पश्चिमी क्षेत्र में प्रथम स्थान

पिपरिया गोपाल गाँव मध्य प्रदेश के सुप्रसिद्ध क्षेत्र बुंदेलखंड के सागर जिले में स्थित है। यह ग्राम पंचायत लगभग 1158 हेक्टेयर भू-भाग पर फैली हुई है। इस ग्राम पंचायत की आबादी लगभग 3,000 है। बुंदेलखंड देश के उन इलाकों में से है जहाँ लोग पिछले कई सालों से जल की कमी का सामना कर रहे हैं। यह कहना गलत होगा कि केवल जलवायु या भौगोलिक परिस्थितियों के कारण यहाँ पानी की कमी है। भारत के अधिकतर इलाके, जहाँ जल संकट गंभीर रूप से व्याप्त है, वहाँ बेहतर जल प्रबंधन का अभाव है। देश में यदि उपलब्ध वर्षा जल को ही सही तरीके से संचित कर के उपयोग में लाया जाए तो एक बड़ी समस्या हल की जा सकती है।

‘आवश्यकता आविष्कार की जननी होती है’ और शायद इसलिए आज देश के अनेकों लोग अपनी आवश्यकता के अनुसार जल संरक्षण व प्रबंधन के अलग - अलग तरीके अपना रहे हैं। जल चर्चा के इस संस्करण में हम आपके साथ पिपरिया गोपाल ग्राम पंचायत के जल संरक्षण प्रयास साझा कर रहे हैं। इन्होंने जल प्रबंधन की तकनीकों से पूरे गाँव की छवि बदल दी है। इस कारण इन्हें जल शक्ति मंत्रालय से राष्ट्रीय जल पुरस्कारों में सर्वश्रेष्ठ ग्राम पंचायत श्रेणी के तहत पश्चिमी क्षेत्र में प्रथम पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है।

पिपरिया गोपाल गाँव पिछले कुछ दशकों से लगातार अपनी प्राकृतिक संपदा खोता जा रहा था। गाँव में जल निकायों की घटती गुणवत्ता, भूमि क्षरण और प्राकृतिक संसाधनों का दोहन पर्यावरण की दृष्टि से सबसे अधिक चिंता के विषय बन गए थे। यह क्षेत्र लगातार घटते भूजल स्तर और पीने के पानी की कमी के कारण गंभीर परिस्थितियों का सामना कर रहा था। भूजल संसाधन के अत्यधिक दोहन के कारण गाँव के सभी कुएँ भी सूख गए थे। वर्ष 2014 में मौसम विभाग ने इस क्षेत्र को सूखा प्रभावित घोषित किया था परन्तु फिर धीरे-धीरे इस गाँव में जल संरक्षण की तकनीकें अपनाई गईं और यह गाँव सभी गाँवों के लिए एक उदाहरण बन गया।

गाँव एमिन अजल प्रबंधन को बेहतर करने के लिए सबसे पहले वर्ष 2016 में प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के तहत वाटरशेड प्रोजेक्ट शुरू किया गया। इस प्रोजेक्ट में सबसे अधिक प्राथमिकता खेत तलाई (फ़ार्म पोंड) निर्माण को दी गई। अभी तक ग्राम पंचायत में 72 तालाबों का निर्माण किया जा चुका है। इनकी सहायता से भूजल स्तर में तो सुधार आया ही है, साथ ही साथ कृषि उत्पाद भी बेहतर हुआ है। ये तालाब वर्षा जल संचित करने की दृष्टि से भी कामयाब हैं। इसके अतिरिक्त गाँव के 1 स्टॉप डैम, 1 तालाब, 60 खेत तलाई का पुनरुद्धार कार्य भी किया गया है।

ग्राम पंचायत द्वारा सरकारी इमारतों में वर्षा जल संचयन प्रणाली स्थापित करवाना अनिवार्य किया गया है। अभी तक 3 विद्यालय, 2 आंगनवाड़ी और 1 पंचायत भवन में यह प्रणाली विकसित की जा चुकी है। वर्षा जल संचयन तकनीकों को ग्राम पंचायत द्वारा बड़े पैमाने पर बढ़ावा इसलिए दिया जा रहा है ताकि स्थानीय लोग भी अपने निजी घरों में वर्षा जल को एकत्रित करने की

तकनीकों को अपनाएँ। ग्राम पंचायत द्वारा लोगों को जल जागरूक बनाने के लिए जल के महत्व व अन्य संबंधित विषयों पर नियमित रूप से जागरूकता अभियान, बैठकी और नुक्कड़ नाटक आयोजित कराए जाते हैं।

ग्राम पंचायत के सफल प्रयासों के कारण ग्रामवासी अब अंततः जल संरक्षण के महत्व को समझ चुके हैं। पिपरिया ग्राम पंचायत द्वारा किए गए परिवर्तन वे निर्णायक परिवर्तन हैं जो आने वाली पीढ़ियों को भी जल संरक्षण के लिए प्रेरित करेंगे। लोग अब जितना संभव हो सकता है उतना जल बचाने के प्रयास करते हैं, लोगों द्वारा वर्षा जल संचयन तकनीक अपनाई जा रही है और कृषक भी जल संरक्षण के लिए ड्रिप इरीगेशन जैसी तकनीकों का प्रयोग कर रहे हैं। पिपरिया ग्राम पंचायत ग्रामवासियों में जल के प्रति व्यवहारिक बदलाव लाने में सफल रही है। यह व्यवहारिक बदलाव ही जल समर्थ बनने के लक्ष्य की पहली सीढ़ी है।



वर्षा जल को क्यों संग्रहित किया जाना चाहिए ?

भारत में कितना जल संग्रहित किया जाता है ?

भारत में वर्षा का केवल 8% जल संग्रहित किया जाता है।

वर्षा जल को कैसे संग्रहित कर सकते हैं?

वर्षा जल बांध, छोटे बांध और तालाबों से संग्रहित किया जा सकता है। इसके अलावा, भवन की छतों पर गिरने वाला जल टैंकीयों में संग्रहित किया जा सकता है।



छत पर गिरने वाले वर्षा जल का उपयोग कैसे करें ?

यह जल निम्न स्थानों में संग्रहित कर सकते हैं:

- टैंकी
 - कुएं या ट्यूबवेल
 - रिसाव तालाब, खेत तालाब
- संग्रहित जल का उपयोग कृषि या घरेलू कार्यों के लिए किया जा सकता है। इसे थोड़ा प्रसंस्करण द्वारा पीने योग्य बनाया जा सकता है।

यह करके देखें

एक साधारण वर्षा मापक यन्त्र बनाकर अपने क्षेत्र में होने वाली वर्षा को मापें।

वर्षा से भारत को कितना जल प्राप्त होता है ?



हर साल वर्षा से भारत को लगभग 4,000 घन किलोमीटर (1 घन मीटर = 1000 लीटर) जल प्राप्त होता है। परंतु ...

- अधिकतर वर्षा केवल मानसून के दौरान (जून से सितंबर) होती है।
- कुछ स्थानों की तुलना में अन्य स्थानों पर बहुत कम वर्षा होती है। जैसे, कोंकण की तुलना में मराठवाड़ा में कम वर्षा होती है।
- वर्षा का अधिकांश जल देश भर की प्रमुख नदियों के माध्यम से समुद्र में मिलता है। जल की थोड़ी मात्रा मिट्टी में अवशोषित होती है और उससे भी कम मात्रा जलाशयों में संग्रहित होती है।

वर्षा जल को क्यों संग्रहित करना चाहिए ?

भारत में लगभग 80 % जल का उपयोग कृषि के लिए किया जाता है। इसमें से अधिक जल जमीन के भीतर से निकाला जाता है। हम जमीन में रिसने वाले जल की अपेक्षा जमीन से अधिक जल खींच रहे हैं। इसलिए, यदि हमने भूजल के उपयोग को कम करके वर्षा के जल का उपयोग नहीं किया तो भविष्य में भारी जल - संकट का सामना करना पड़ सकता है।



गणना करें कि वर्षा का कितना जल एकत्रित किया जा सकता ?



- अपने क्षेत्र में औसत वार्षिक वर्षा का पता लगाएं। आप यह जानकारी समाचार - पत्र या अन्य स्रोत से पा सकते हैं। आप खुद भी वर्षा मापक यंत्र बनाकर वर्षा को माप सकते हैं।
- उस स्थान के क्षेत्रफल को मापें जहां वर्षा के जल को एकत्रित किया जा सकता है। जैसे: अपने स्कूल या घर की छत।
- इस सूत्र का उपयोग करके पता लगाएं कि कुल कितना घन मीटर जल एकत्रित हो सकता है: वार्षिक वर्षा (मीटर में) क्षेत्रफल (वर्गमीटर में)



सर्वश्रेष्ठ नैगमिक सामाजिक उत्तरदायित्व - अडानी पोर्ट एंड एसईजेड लिमिटेड (APSEZ)

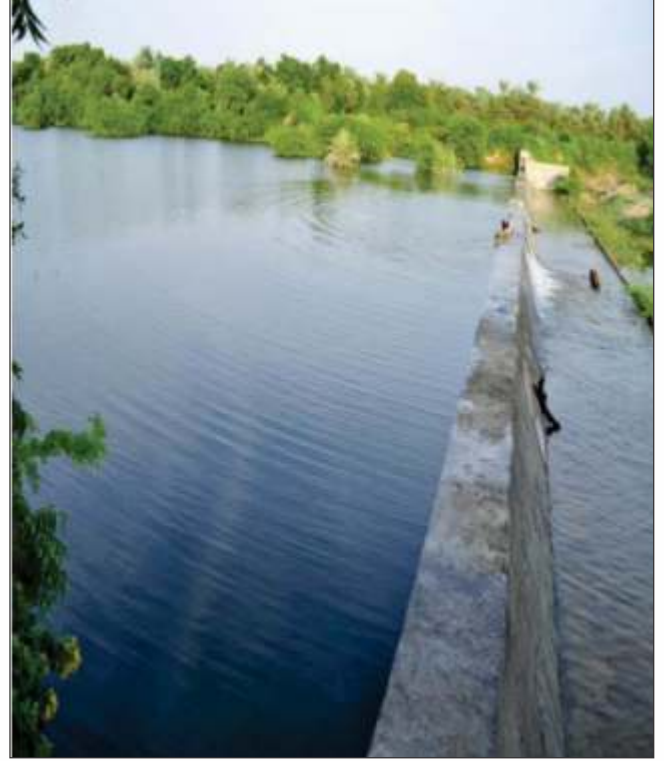
तीव्रता से प्रौद्योगिकी व तकनीकी तरक्की कर रही इस धरती पर आज हमें नैगमिक सामाजिक उत्तरदायित्व (Corporate Social Responsibility) निभाने वाली कंपनियों की अधिक से अधिक आवश्यकता है। यह वही उत्तरदायित्व है जो देश के हर नागरिक का पर्यावरण और जन्मभूमि के प्रति होता है। जो व्यक्ति जितना समर्थ है उसका अपनी जन्मभूमि के प्रति उत्तरदायित्व भी उतना अधिक है। भारत में अनेकों ऐसी कम्पनियाँ हैं जो अपने कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व को पूरा कर समाज सुधार में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। ये कंपनियाँ सीएसआर के तहत जल संरक्षण के क्षेत्र में भी सराहनीय काम कर रही हैं।

ऐसा ही जल संरक्षण का अद्भुत काम कर रहा है - अडानी फाउंडेशन! अडानी पोर्ट एंड एसईजेड लिमिटेड (APSEZ) के 'अडानी फाउंडेशन' की स्थापना वर्ष 1996 में हुई थी और तभी से यह संगठन शिक्षा, स्वास्थ्य, सामुदायिक सशक्तिकरण, पर्यावरण संरक्षण व सतत विकास जैसे लक्ष्यों पर काम कर रहा है। इनके सफल प्रयासों से आज तक लगभग 3.2 मिलियन से भी अधिक लोग लाभान्वित हुए हैं। आज अडानी फाउंडेशन देश के 13 राज्यों में समाज की बेहतरी के लिए कार्य कर रहा है। इस संगठन की मुख्य कर्मभूमि गुजरात का कच्छ जिला है जहाँ ये बीते कई सालों से जल संरक्षण व अन्य सामाजिक सशक्तिकरण के कार्य कर रहे हैं।

जल संरक्षण में अडानी फाउंडेशन ने पानी की भारी कमी वाले क्षेत्र कच्छ में "SWAJAL - A Drive of Water Conservation" मुहिम के तहत उल्लेखनीय कार्य किया है। अडानी फाउंडेशन ने 52 तालाबों का गहरीकरण करवाया है और इससे 220 हेक्टेयर की भूमि सकारात्मक रूप से प्रभावित हुई है और साथ में जल आपूर्ति में 85.97 मिलियन क्यूबिक फीट की वृद्धि देखी गई है। अडानी फाउंडेशन द्वारा भूजल स्तर को बेहतर करने के लिए सुजलाम सुफलाम जल अभियान के तहत 26 नए तालाबों का निर्माण करवाया है जिससे क्षेत्र का भूजल स्तर बढ़ा है। इस फाउंडेशन द्वारा जिले में 18 से अधिक चेक डैम का निर्माण करवाया गया है। इनके फलस्वरूप 637 हेक्टेयर कृषि क्षेत्र लाभान्वित हुआ है और जल आपूर्ति 17.87 मिलियन क्यूबिक फीट तक बढ़ी है।

वर्षा जल के सदुपयोग हेतु 54 रुफ टॉप वर्षा जल संचयन संरचनाएँ और 75 बोरेवेल रिचार्ज संरचनाएँ विकसित की गईं। अडानी फाउंडेशन द्वारा 31 कुओं को पुनर्जीवित करने का भी कार्य किया गया है। इन प्रयासों के अतिरिक्त अडानी फाउंडेशन द्वारा लोगों को ड्रिप इरीगेशन व अन्य जल मैत्री कृषि संबंधी तकनीकों को अपनाने के लिए लगातार प्रोत्साहित किया जा रहा है। इस प्रकार के कार्यों को आम लोगों और किसानों की सराहना लगातार प्राप्त हो रही है। अडानी फाउंडेशन द्वारा किए जा रहे जल संरक्षण के सभी प्रयास अत्यंत सराहनीय हैं और अन्य बड़ी कंपनियों व लोगों के

लिए प्रेरणा के बड़े स्रोत हैं। हमें आशा है आपको भी ये प्रयास अवश्य पसंद आएँगे।



21st Water Talk

The 21st Water Talk was organized by National Water Mission on 15th January 2021. Shri Anil Singh, Founding Member, Parmarth Samaj Sevi Sansthan delivered the talk. Shri U. P. Singh, Secretary, Ministry of Jal Shakti, Shri G. Asok Kumar, Additional Secretary & Mission Director, NWM, officials from organizations of D/o WR, RD & GR and participants from various other organizations attended the programme. The event engaged 20,000 viewers through social media platforms.

The topic of the e-talk by Shri Anil Singh was “Efficient Use of Water in Agriculture for Water Security”. The organization primarily works for the upliftment of poor, marginalized, vulnerable and deprived sections of society in the remote, ravine and drought affected areas of Bundelkhand region of Uttar Pradesh & Madhya Pradesh. Shri Anil Singh explained that the region has been facing multiple vulnerabilities wherein feudal system, caste discrimination, gender discrimination, untouchability, illiteracy, poverty, migration, natural calamities, drought etc are the major factors impacting the region. The NGO's approach included preparing people to become self-reliant by knowledge-building and strengthening capabilities, mobilizing & organizing community group with focus on dalits/ adivasi women, public engagement and campaigning. As the strategy was mainly empowering the local villagers to bring reforms, community-driven “Pani Panchayats”, “Jal Sahelis”, “Jal Doots” and “Jal Yodhas” were created and capacitated to work towards water conservation.

Many water bodies have also been revived and rainwater harvesting structures have been constructed for water conservation by the organization. With respect to agriculture, many techniques like drip and sprinkler irrigation techniques were introduced and promoted amongst farmers to conserve water. He reiterated on the significance of public participation and community efforts which are the foundation of making India water secure.



कच्छ है जल संरक्षण में पश्चिमी क्षेत्र का सर्वश्रेष्ठ जिला

क्या आप जानते हैं कि पश्चिमी भारत में स्थित गुजरात राज्य का जिला कच्छ भारत का सबसे बड़ा जिला है जिसका कुल क्षेत्रफल 45,674 वर्ग किमी है। कच्छ की आबादी लगभग 2,092,371 है। इस जिले में 10 तालुका, 939 गाँव और 6 नगर पालिकाएँ हैं। जिले के एक बड़े हिस्से को कच्छ के रण के रूप में जाना जाता है। रण अपने दलदली नमक के लिए जाना जाता है, जो मानसून की बारिश से पहले प्रत्येक मौसम में उथले पानी के सूखने के बाद बर्फ के जैसा सफेद हो जाता है। जल चर्चा के इस संस्करण में हम आपको कच्छ जिले के जल संरक्षण प्रयासों के बारे में बता रहे हैं। यह जिला अपने प्रयासों के कारण जल संरक्षण के क्षेत्र में श्रेष्ठ बन गया है। कच्छ में कुल 97 नदियाँ हैं, जिन्हें दो समूहों में विभाजित किया जा सकता है, एक समूह की नदियाँ अरब सागर में बहती हैं और दूसरे समूह की नदियाँ कच्छ के रण में ही मिल जाती हैं। जिले में 20 बड़े बाँध और कई छोटे बाँध वर्षा ऋतु के समय अपवाह को नियंत्रित करते हैं और ज़रूरत के समय सिंचाई और पीने के पानी के स्रोत बनते हैं।

कच्छ जिला एक सूखा प्रभावित क्षेत्र है और यहाँ पानी की कमी लगातार सिंचाई व अन्य दैनिक आवश्यकताओं को बुरी तरह प्रभावित करती है। वर्ष 2018- 2019 के बीच कच्छ में 30 वर्षों में सबसे भयंकर सूखा पड़ा और जिले के सभी प्रमुख बांध सूख गए। कच्छ के लोग मुख्य रूप से वर्षा आधारित कृषि और पशुपालन पर निर्भर हैं। जल के अभाव में कृषि, पशुपालन और आम जीवन संकट में था और भूजल स्तर भी लगातार नीचे गिर रहा था। इन सभी समस्याओं के कारण लोग शहरों की ओर पलायन कर रहे थे।

इन समस्याओं से मुक्त करने और अपने क्षेत्रवासियों को सूखे के दुष्प्रभावों से बचाने के लिए जिला प्रशासन ने जल संरक्षण के क्षेत्र में कई अहम कदम उठाए जिसके कारण कच्छ की छवि में बड़ा परिवर्तन आया है। इस अभियान में नए चेकडैम, वर्षा जल संचयन प्रणाली व तालाबों का निर्माण और पुराने कुओं, तालाबों, नदियों व अन्य जल निकायों का पुनरुद्धार करना शामिल है। कुल 431 नए ढांचे बनाए गए और 968 मौजूदा तालाबों को गहरा किया गया, जिससे जिले की कुल जल संग्रहण क्षमता 952.57 मिलियन क्यूबिक फीट हो गई और इससे सिंचाई क्षमता भी 8168.65 हेक्टेयर तक बढ़ गई। इन तालाबों में से 284 तालाब गुजरात सरकार की महत्वकांक्षी योजना 'सुजलाम सुफलाम योजना' के तहत पुनर्जीवित किए गए थे जिसका मुख्य उद्देश्य ही वर्षा जल संचयन के अनुकूल बनाने हेतु गहरा करना है।

इन सभी कार्यों में मनरेगा (MGNREGA) के तहत श्रमिकों ने ही जल संरक्षण ढांचों का निर्माण किया। इससे गाँव के लोगों को रोज़गार मिला और जल के बेहतर स्रोत भी उपलब्ध हो पाए। मनरेगा के तहत श्रमिकों ने

कई तहसीलों में कन्टूर ट्रेंच और स्टैगर्ड ट्रेंच का निर्माण किया जिनकी कुल जल संग्रहण क्षमता 0.19 मिलियन क्यूबिक फीट है। इनके माध्यम से सतही जल अपवाह लगभग 80% तक कम हुआ है। इन प्रयासों के कारण कुल सिंचित क्षेत्र में भी लगभग 3.63% की बढ़ोतरी देखी गई है। जिला वाटरशेड विकास इकाई (DWDU) विभाग द्वारा कुल 86 भूजल पुनर्भरण संरचनाओं का निर्माण किया गया और सड़क एवं भवन निर्माण विभाग द्वारा अलग अलग बिल्डिंग में 105 वर्षा जल संचयन संरचनाओं का निर्माण किया गया।

इन सभी प्रयासों के अतिरिक्त जिले के लोगों को अपशिष्ट जल के पुनर्प्रयोग की तकनीकों से परिचित कराया जा रहा है। अपशिष्ट जल को रीसाइकल करने हेतु सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट की स्थापना की गई है जिससे एक दिन में 115 मिलियन लीटर जल को पुनर्प्रयोग के अनुकूल बनाया जा सकता है। इस उपचारित जल का उपयोग सिंचाई और औद्योगिक उद्देश्य के लिए किया जाता है।

कच्छ जिले में सूखे से लड़ने के लिए सभी सरकारी विभागों ने एक ही मंच पर आकर जल संरक्षण गतिविधियों को लागू करने का काम किया है। सरकारी विभागों के अतिरिक्त अन्य सभी हितधारक भी यहाँ ग्रामीण समुदाय की बेहतरी के लिए प्रयास कर रहे हैं। कच्छ के लोगों के पास अब जल के पर्याप्त जल स्रोत तो हैं ही और अब वे जल जागरूक भी हैं। यह कहना गलत नहीं होगा कि कच्छ का जल संरक्षण का मॉडल सामूहिक प्रयासों का उत्तम उदाहरण है और हम सभी को जल संरक्षण के लिए प्रेरित करता है।



PEOPLE'S INITIATIVE



Saraswati Educational Society in association with Nehru Yuva Kendra organized a painting competition on the theme 'Save Water Save Earth' for the students.



बूंद फाउंडेशन द्वारा पर्यावरण बचाने के उद्देश्य से मेरठ कमिश्नर पार्क चौराहे पर एक झांकी संदेश कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के माध्यम से लोगों को पर्यावरण के प्रति बढ़ रहे खतरे से चेताया गया और पेड़ों की कमी से जल संकट के बढ़ते खतरे से भी लोगों को अवगत कराया गया। झांकी में फाउंडेशन के सदस्य पेड़ रूपी आकार की वेशभूषा को प्रदर्शित करते हुए यह संदेश दिया कि "हमें मत काटो। हम आपका जीवन हैं, हम भी आपके परिवार के पोषक हैं।"

मिशन बीट प्लास्टिक रणथंभोर अभियान के तहत 7 दिवसीय रणथंभोर रोड क्लीन अप प्रोग्राम को चलाया गया जिसके अंतर्गत प्लास्टिक, पॉलिथीन व विभिन्न प्रकार का कचरा इकट्ठा कर साफ सफाई की गयी। यह 7 दिवसीय रणथंभोर रोड क्लीनअप प्रोग्राम बाघ संरक्षण एवं ग्रामीण विकास समिति सवाई माधोपुर व Tiger Watch के संयुक्त तत्वाधान में चलाया गया था।



विश्व आर्द्रभूमि दिवस (वर्ल्ड वेटलैंड्स डे) के अवसर पर ईको-स्किल्ड गंगामित्र सुपर एक्सप्रेस टीम (महामना मालवीय गंगा शोध केंद्र बीएचयू वाराणसी) द्वारा नुवाव ग्राम सभा में प्रकृति संरक्षण हेतु चित्रकारी प्रातियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें कक्षा 1 से लेकर कक्षा 8 तक के बच्चों ने बढ़चढ़कर भाग लिया। "वेटलैंड एंड वाटर" थीम को लेकर बच्चों ने एक से बढ़कर एक प्रकृति संरक्षण हेतु चित्रकारी की। बाल गंगामित्र अंशिका व सूरज कुमार ने जन-सामान्य को जागरूक करने हेतु यह संदेश दिया कि जल हमारे जीवन के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है और इसे बचाकर रखें, क्योंकि जल है तो कल है।

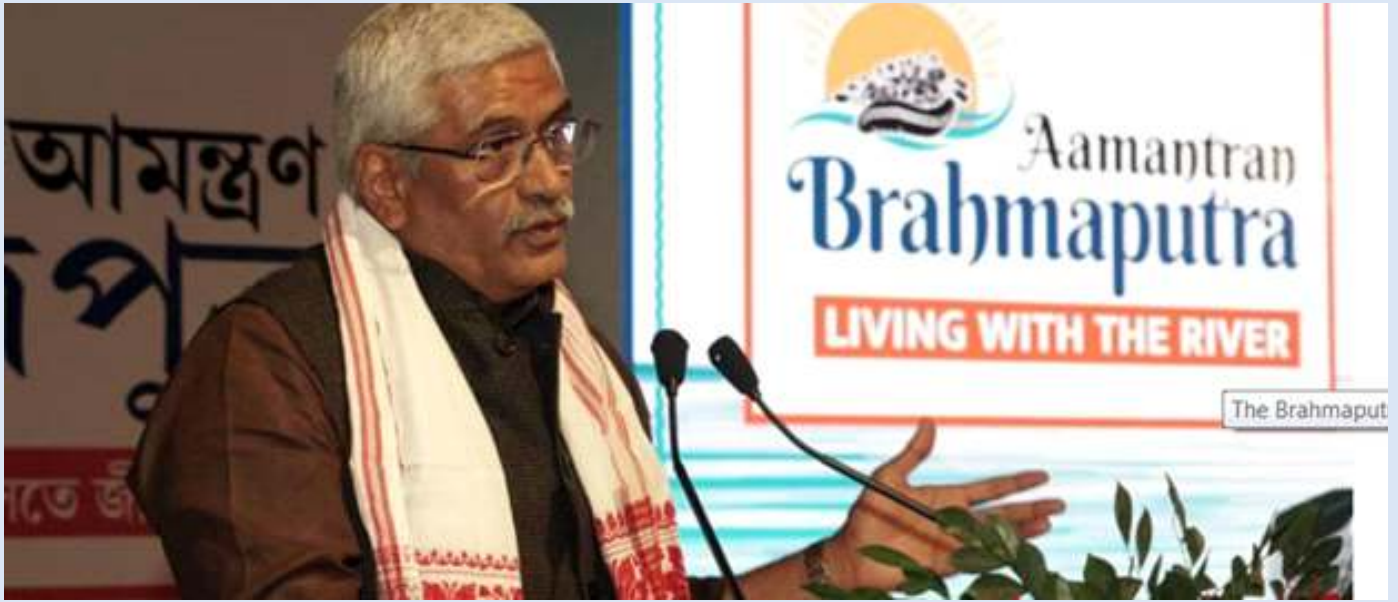
टीम लीडर धर्मेन्द्र पटेल ने बताया कि हर वर्ष 2 फरवरी को विश्व आर्द्रभूमि दिवस (वर्ल्ड वेटलैंड्स डे) मनाया जाता है ताकि विश्व भर में विभिन्न उपायों व आयोजनों के माध्यम से इसके बारे में वैश्विक स्तर पर जन सामान्य को जागरूक किया जा सके। पानी की कमी को कम करने में आर्द्रभूमि महत्वपूर्ण सिद्ध होती है। से के माध्यम से ताजा पानी उपलब्ध किया जा सकता है और जल संग्रहण का भी यह एक उत्तम साधन है।

नदियों, झीलों, तालाबों आदि की खराब होती स्थिति को देखते हुए साल 1971 में 2 फरवरी को ईरान के रमसर में वेटलैंड कन्वेंशन को अपनाया गया था।

ईको-स्किल्ड गंगामित्र सुपर एक्सप्रेस टीम में घनश्याम कुमार, धर्मेन्द्र कुमार, अजय, रविन्द्र गुप्ता, धर्मेन्द्र पटेल, स्नेहा कश्यप, कैलाश, वैष्णवी, निकिता, प्रियंका, रुपा, शिवेंद्र, अदिति, प्रतिभा, सभ्या, रविन्द्र, खुशबू, सुनीता, नेहा, अंजली, उत्कर्ष आदि गंगामित्रों का कार्य सराहनीय रहता है। उल्लेखनीय है कि ईको-स्किल्ड गंगामित्रों को बीएचयू के महामना मालवीय गंगा शोध केंद्र के चेयरमैन प्रख्यात पर्यावरण वैज्ञानिक प्रो० बी० डी० त्रिपाठी के निर्देशन में प्रशिक्षित किया गया है।



Brahmaputra Aamantran Abhiyan Concludes



The 29-day long Brahmaputra Aamantran Abhiyan, a rafting expedition that covered the entire 917 km long route of the Brahmaputra River in India concluded on January 20th at Assameraga near the Indo-Bangladesh Border. The expedition was organised by the Brahmaputra Board under Department of Water Resources, River Development and Ganga Rejuvenation, Ministry of Jal Shakti. The rafting team successfully docked at the last destination point at Assameraga on January 20th afternoon.

The main objective of the Brahmaputra Aamantran Abhiyan was to reach out to the younger generation to inculcate the concept of "Living with the River". A team of experts also conducted a combined scientific data collection and analysis of river water quality, river sediment, river bank erosion and fish habitat along the entire route of the expedition. The Abhiyan also aimed at unearthing the untapped potential of the Brahmaputra River as well as to study the causes of river erosion. The rafting expedition was flagged off on December 23rd, 2020 at Gelling in Arunachal Pradesh by Shri Kiren Rijiju, Union Minister of Sports and Youth Affairs.

Shri Sarbananda Sonowal, Assam Chief Minister participated in the 'Brahmaputra Aamantran Abhiyan' at Majuli on January 7th. Speaking on the occasion, Shri Sonowal said that the 'Brahmaputra Aamantran Abhiyan' expedition would be helpful in realizing the vast potential of the Brahmaputra. The Chief Minister at the same time stressed on chalking out appropriate plans and programmes to utilize the rich potential of the river.

Underlining the intrinsic relationship of the river with the culture, tradition and lifestyle of the people of the state, the Chief Minister observed that optimum utilization of the potential of the river would significantly contribute in boosting the economy of the State. He also spoke about devising plans for making adequate use of the potentialities of the tributaries of Brahmaputra and Barak Rivers and hoped that the expedition would prove to be a boon for sustainable development of the people living on both sides of the rivers. Ms. Suhashini Shekhawat who was part of the rafting team highlighted the thrilling experiences the team encountered at various places during the expedition. Ms. Shekhawat stressed on joint initiatives of the government and the public for maintaining the pollution-free environment of the river. She also urged the youth to work for preservation of the rich potential and pollution-free environment of the Brahmaputra. Shri Rajiv Yadav, Chairman of the Brahmaputra Board said: "The main objective of the BAA is to understand how to co-exist with the river and understand its benefits. The expedition is not just about rafting and adventure sports, but a very important aspect is the scientific study which is happening alongside. This will help in acquiring a lot of important information about the river, the soil and other important factors."

Shri Gajendra Singh Shekhawat, Union Minister for Jal Shakti also joined the rafting team at Guwahati on January 14th and felicitated the team members at an event organised in the State Capital. A theme song on the Brahmaputra Aamantran Abhiyan,

written and composed by Dr. Arup Kr Sarma, was also released by the Hon. Minister. Shri U.P. Singh, Secretary, Ministry of Jal Shakti, took part in the expedition from Tazpur on January 10th.

A programme to commemorate the success of the expedition was held on January 21st, 2021 at Natasurjya Phani Sarma Bhawan in Assam. The programme was attended by Sh. Rajiv Yadav, Chairman, Brahmaputra Board, Smt. Varnali Deka, Deputy Commissioner, Goalpara district, Sh. R.S. Gill, Commandant of 1st Battalion, NDRE, Prof. Arup Sarma of IIT Guwahati, Sh. P.M. Scott, Vice-Chairman of Brahmaputra Board and the entire rafting team. Various institutions and the rafting team were felicitated at the function. Winning students of Goalpara area who participated in the debate and essay writing competition on the theme 'Living with the River' were also warmly felicitated at the function.

The rafting expedition was concluded in three legs. While the first leg sailed from Gelling (Arunachal) to Pasighat along the Siang River, the team rafted through Majuli island and Tezpur in the second leg. The third leg traversed through Sonitpur, Nagaon, Darrang, Kamrup, Nalbari, Barpeta, Bongaigaon, Goalpara finally ending at Assameralga near the Indo-Bangladesh border.





Shri Gajendra Singh Shekhawat, Union Minister of Jal Shakti, inaugurated the renovated North Eastern Hydraulic and Allied Research (NEHARI) of Brahmaputra Board on January 14th in Guwahati. The Minister took a tour of the in-house testing facility and infrastructure available at NEHARI. He also visited the soil laboratory, and was apprised about the ongoing projects at NEHARI, which is a unique laboratory to facilitate scientific decision-making process for implementation of River Training and Flood Management schemes. The Minister visited Guwahati to take part in the 'Brahmaputra Aamantran Abhiyan' organised to mark the completion of the third leg of the expedition. Shri Chandra Mohan Patowari, Hon'ble Minister of Transport, Parliamentary Affairs, Skill Development & Entrepreneurship, Industry and Commerce, Government of Assam, Shri Pradhan, DIG, NDRE, Prof. Chandan Mahanta, IIT-Guwahati, Shri T.S. Mehra, Commissioner (B&B), along with entire rafting team were present during the event.



Shri J.C. Madhu Swamy, Hon. Minister for Minor Irrigation & Groundwater Development, Karnataka, discussed the Atal Jal activities with Gram Sabha and the local people who gathered at the JC Pura village temple premises during the field visit of the NPMU & SPMU teams of the Department of Water Resources, River Development and Ganga Rejuvenation, Ministry of Jal Shakti on January 28th 2021. Dr. Nandakumaran, Member, CGWB and his team was also present.



Shri Pramod Sawant, Hon. Chief Minister of Goa launched the State Level 'Catch the Rain' Project on January 31st, 2021.



राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की व विभिन्न क्षेत्रीय केन्द्रों में गणतंत्र दिवस समारोह की एक झलक



Jal Shapath was taken by the officials of various organisations including NERIWALM, NWM and CSMRS of the Department of Water Resources, River Development and Ganga Rejuvenation, Ministry of Jal Shakti on January 1st, 2021 to welcome the New Year and strengthen the resolve to keep working committedly for water conservation. As part of the district-wise launch of NYKS program for 'Catch the Rain', over 13 lakh people took 'Jal Shapath' in various parts of the country.



राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की के आवासीय परिसर (जलविहार कॉलोनी) में संस्थान द्वारा परिकल्पित एवं निर्माणित निर्मित आर्द्रभूमि (constructed wetland) आधारित मलजल (sewage) उपचार संयंत्र का लोकार्पण संस्थान के निदेशक डॉ. जयवीर त्यागी जी के द्वारा किया गया। नवनिर्मित मलजल उपचार संयंत्र की मदद से मलजल में उपस्थित प्रदूषण को पूरी तरह निस्तारित करके उपचारित मलजल को आवासीय परिसर में बागबानी जैसे कार्यों में उपयोग किया जा सकेगा।



Shri R.K. Jain, Chairman, Central Water Commission and others were part of a discharge observation team of River Yamuna on January 14th, 2021 using ADCP procured under National Hydrology Project.



Shri Rajiv Ranjan Mishra, DG, NMCG chaired the 32nd and 33rd Executive Committee meetings on 7th and 20th January 2021 respectively. In the 32nd meeting, Sh. Rozy Aggarwal, ED Finance made a presentation on Arth Ganga and action being taken. In both the meetings, experts from various fields and departments also participated from senior officials.



स्वच्छ सर्वेक्षण 2021 के दौरान नगर निगम रुड़की द्वारा स्वच्छता रैंकिंग के लिए राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान रुड़की को नगर निगम के मेयर श्री गौरव गोयल एवं नगर आयुक्त श्रीमती नूपुर वर्मा जी के कर कमलों द्वारा द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया। श्री गौरव गोयल जी द्वारा राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान द्वारा किए जा रहे कार्यों के लिए हार्दिक बधाई प्रदान की गई तथा राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान से इसी तरह कार्य करने की अपेक्षा की तथा आशा व्यक्त की कि राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान का सहयोग नगर निगम को पूर्व की भांति मिलता रहेगा।



A farewell was organized for Shri U.P. Singh, who was transferred to Secretary, Ministry of Textiles. Shri Pankaj Kumar, a 1987 batch IAS officer took charge as the new Secretary, Department of Water Resources, River Development and Ganga Rejuvenation.



राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान, रुड़की ने सोलानीपुरम ड्रेन में स्वस्थानी प्राकृतिक उपचार तंत्र (जैव पादप उपचार विधि) से घरेलू अपशिष्ट जलशोधन की प्रायोगिक व्यवस्था का शुभारंभ किया। व्यवस्था का शुभारंभ मेयर गौरव गोयल, पार्षद देवकी जोशी व रमेश जोशी के नेतृत्व में हुआ। यह प्रायोगिक कार्य विज्ञान और प्रौद्योगिक मंत्रालय भारत सरकार की ओर से है। जिसके मुख्य परियोजना अन्वेषक संस्थान प्रबंधन एवं प्रसार प्रभार के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. विकास चंद्र गोयल है।



Hon'ble Minister of State for Ministry of Jal Shakti, Shri Rattan Lal Kataria took a review meeting of CSMRS and said that the Institute is making silent yet significant contribution in almost every WR Project of National and International importance. Shri Kataria termed the institute as a symbol of India's soft power and gave credit for its success to the hardworking scientists of the Institute.



जल ही जीवन है

पृथ्वी पर जल प्रचुर मात्रा में है। पृथ्वी की सतह का 70% भाग जल से भरा हुआ है। लेकिन इस जल का 1 % से भी कम भाग पीने योग्य है। यह जल ग्लेशियर्स, नदी, तालाब, पृथ्वी के अन्दर व पहाड़ों पर उपलब्ध है। इसी जल का प्रयोग हम पीने के लिए करते हैं। पृथ्वी पर जनसंख्या बढ़ने, एवं जल प्रदूषण के कारण पीने के पानी की कमी होती जा रही है। आज जल प्रदूषण अपने चरम पर है। प्लास्टिक का प्रयोग व कारखानों के केमिकल को नदी-नालों में बहाने के कारण पृथ्वी के अन्दर का जल व नदियों का जल प्रदूषित होता जा रहा है। प्रदूषण कम करने के लिए हमें जागरूकता की आवश्यकता है।



यह जागरूकता हम स्कूलों के माध्यम से आसानी से पैदा कर सकते हैं। हमने छात्रों के अन्दर जल संरक्षण व जल प्रदूषण कम करने के लिए अनेक जागरूकता कार्यक्रम

आयोजित किये जिसमें हमने अपने 1700 छात्रों व शिक्षकों को जल संरक्षण की शपथ दिलाई।

यह शपथ कार्यक्रम हमने वर्ष में तीन बार आयोजित किये। हमने छात्रों के लिए जल संरक्षण पर पेंटिंग प्रतियोगिता का 2 बार आयोजन किया तथा अच्छी पेंटिंग का विडियो बनाकर सभी छात्रों को भेजा। हमने विद्यालय की दीवारों व बाउन्ड्रीवाल पर जल संरक्षण की पेंटिंग बनवायी ताकि जो भी उसे देखे वह जल संरक्षण के लिए प्रेरित हो। हमने छात्रों के लिए NIH की सहायता से 3 बार जल प्रदर्शनी का आयोजन किया, इन जल प्रदर्शनियों में छात्रों ने बड़ चढ़कर हिस्सा लिया। इसके अलावा हमने छात्रों के लिए Water Magazine भी बनवायी तथा इसको सभी छात्रों को भेजा। हमने Save Water Save Future पर फेसबुक पर एक पेज भी बनाया तथा Save One Litre Water Per Day पर भी एक पेज बनाया जिस पर 350 से ज्यादा सदस्य हमेशा Active रहते हैं और जागरूकता पैदा करते हैं। हमने छात्रों को R.O. के पानी को सुरक्षित करने का सन्देश देने के लिए R.O. के पानी को इकट्ठा कर उसका प्रयोग पौधों को जल देने में किया। हमने A.C. के पानी को भी इकट्ठा कर उसका प्रयोग पौधों को जल देने में किया।

हमने नल के पानी एवं वॉशबेसिन के व्यर्थ होते जल को



भी इकट्ठा कर उसका प्रयोग पौधों को जल देने में किया। हमने विद्यालय में पानी को व्यर्थ होने से बचाने के लिये अच्छी प्रकार की PushType टॉटियों का प्रयोग किया हमने विद्यालय में छोटे क्षमता वाले पानी के सिस्टर्न का प्रयोग किया। हमने छात्रों को की बोटल लाने के लिए प्रेरित किया तथा हमने बचे हुए पानी को छात्रों द्वारा जाते वक्त पौधों में डालने की आदत विकसित की।

हमने आसपास के गांवों के लोगों को जागरूक करने के लिए रैलियों का आयोजन किया। मैंने रुड़की के अन्दर के स्कूलों व ऑफलाइन माध्यम से अब तक 10 हजार से ज्यादा छात्र छात्राओं व शिक्षकों को जल संरक्षण की शपथ दिलाई। हमने वर्ष में 3 बार ऑनलाइन वाटर क्विज का आयोजन किया ताकि जागरूकता फैलाई जा सके। हमने NIH के वैज्ञानिकों के साथ वेबिनार का आयोजन भी किया जिसमें हमारे छात्रों ने भाग लिया। हमने NIH के वैज्ञानिकों की जलवार्ता भी आयोजित करवाई। हमने देखा कि हमारे इन प्रयोगों से छात्रों में जागरूकता आई। मुझे MOWR से 2020 में वाटर हीरो का अवार्ड भी मिला।



हमने वर्षा जल संरक्षण के लिए भी विद्यालय में 50,000 लीटर का वाटर टैंक बनवाया। हमने तीन हैंडपंप के लिए भी उनके व्यर्थ होते जल के संरक्षण के लिए तीन टैंक बनवाये ताकि उनका जल संरक्षित किया जा सके। इसके अलावा हमने वर्षा के जल के संरक्षण के लिये पौधों के चारों ओर गड्ढे बनवाये, छोटी-छोटी दीवार बनवाकर पानी एकत्र करने का प्रयास किया।



हमारा जागरूकता अभियान जारी है। हम छात्रों की जल जागरूकता के लिए लगातार प्रयत्न कर रहे हैं। हम चाहते हैं कि यदि सभी स्कूल इस प्रकार से प्रयास करें तो हम जल संरक्षण कर सकते हैं तथा जल प्रदूषण को कम कर सकते हैं।

वी के त्यागी
प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय नं० 1 रुड़की

संस्कृति फाउंडेशन – एनजीओ

जल संकट एक ऐसी समस्या है जिसके विचार मात्र से भय लगता है। न चाहते हुए भी विश्व के अधिकतर देश लगातार इस विशालकाय संकट से जूझ रहे हैं। जितना डर इसके बारे में सोचकर लगता है उतनी ही राहत यह देखकर भी मिलती है कि धीरे-धीरे देश के लोग जल संरक्षण की तकनीकों को अपना रहे हैं। देश में कई सरकारी और गैर-सरकारी संगठन मुख्यतः जल संरक्षण के लिए ही कार्य कर रहे हैं। हमारी मासिक पत्रिका 'जल चर्चा' के प्रत्येक अंक में हम आपको ऐसे ही गैर सरकारी संगठनों से परिचित कराते हैं जो जल संरक्षण के क्षेत्र में काम कर अनेकों लोगों को लाभान्वित कर रहे हैं।

'जल चर्चा' के इस अंक में हम आपको संस्कृति फाउंडेशन नामक गैर सरकारी संगठन से परिचित करा रहे हैं जो पिछले 5 सालों से जल संरक्षण के क्षेत्र में कार्यरत है। संस्कृति फाउंडेशन के संस्थापक रणजीतसिंग जब 'India is my country' कहते थे तब वे हमेशा यही सोचते थे कि इस वाक्य का मतलब देश की प्रत्येक समस्या को अपना समझना ही तो है। देश के सच्चे नागरिक होने के लिए देश के प्रति अपने दायित्वों को निभाना अनिवार्य है। इन्हीं समस्याओं के निवारण के उद्देश्य और स्वामी विवेकानंद जी से प्रेरित हो कर 12 जनवरी, 2015 को 'संस्कृति फाउंडेशन' की स्थापना की गई। इस संस्था में अधिक से अधिक युवाओं को भाग लेने के लिए प्रेरित किया गया और उन सभी के बीच "together we can make a change" टैगलाइन भी प्रचलित हो गई। यह एनजीओ महाराष्ट्र के जलगांव जिले के भुसावल शहर और आस पास के गाँवों में जल संरक्षण का कार्य कर रही है।

भुसावल शहर तापी नदी के तट पर स्थित है। यहाँ पेयजल का एकमात्र स्रोत भी तापी नदी ही है परन्तु जल में उपचारित व अर्ध-उपचारित उद्योगिक अपशिष्ट जल व घरेलू अपशिष्ट जल मिले होने के कारण इस नदी के जल की गुणवत्ता बीते 50 सालों से लगातार घट रही है। इन्हीं सब समस्याओं के कारण संस्कृति फाउंडेशन ने जल संरक्षण और जल के वैकल्पिक स्रोत विकसित करने के प्रयास किए हैं। वर्ष 2019 में संस्था के लोगों ने रिवर रिसिडेशन प्रोजेक्ट शुरू किया। इस प्रोजेक्ट का मुख्य उद्देश्य लुप्त होती छोटी धाराओं को बड़ा रूप दे कर पुनर्जीवित करना था।

इस प्रोजेक्ट के तहत वाघुर बाँध के समीप एक ड्रेन को पुनर्जीवित किया गया जो लगभग 6 गाँवों को लाभान्वित करती है। इन धाराओं को पुनर्जीवित करना कोई साधारण काम नहीं था। जो धाराएँ पिछले कई सालों से सूखी पड़ी हों और लोग उन्हें कच्चे रास्ते समझने लगे तो ऐसे में कल्पना की जा सकती है कि वास्तविक परिदृश्य में वे कैसी रही होंगी। इसे पुनर्जीवित करने के लिए 5 चरणों में काम किया गया और लोगों को जागरूक करने के लिए सोशल मीडिया की सहायता ली गई। इस नेक कार्य में आसपास के लोगों ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

संस्कृति फाउंडेशन के सफल प्रयासों से वर्ष 2016 में जल संरक्षण के लिए भुसावल के पास खड़का और किन्ही गांव में लगभग 80 से 90 हजार लीटर की क्षमता वाला जलाशय बनाया गया था। पिछले 5 वर्षों से संस्कृति फाउंडेशन गणेशोत्सव में विसर्जन के दूसरे दिन नदी स्वच्छता अभियान आयोजित करता है, जिसमें सभी स्वयंसेवक नदी को प्लास्टिक मुक्त बनाने का प्रयास करते हैं। इसके अतिरिक्त विसर्जन के समय नदियों को जल प्रदूषण से बचाने के लिए कृत्रिम तालाबों का निर्माण भी करवाया जाता है।

संस्कृति फाउंडेशन द्वारा जल संरक्षण के क्षेत्र में किए जा रहे सभी प्रयास वाकई युवाशक्ति का प्रमाण हैं। युवाशक्ति यदि प्रण ले तो हर असंभव कार्य भी संभव हो जाता है। ऐसी ही मेहनत और ऐसा ही जज्बा देश के प्रत्येक युवा में होना चाहिए ताकि युवा देश कहलाए जाने वाले देश भारत को वास्तव में इसका लाभ मिल पाए। हमें पूरी आशा है कि आप सभी पाठकों को संस्कृति फाउंडेशन के ये प्रयास अवश्य ही जल संरक्षण हेतु कार्य करने के लिए प्रेरित करेंगे।



IN NEWSPAPER

नेहरू केंद्र ने की कैच द रेन की शुरुआत

गुवाहाटी/गुरुनगर संवाददाता

नेहरू युवा केंद्र संगठन की ओर से जल संरक्षण एवं संयोजन अभियान कैच द रेन की शुरुआत की गई। यौके पर धनबाद जिले के खीरीसी दमरभरथर दाम अभियान से संबंधित पोस्टरों का विमोचन किया। उन्होंने कहा कि नेहरू युवा केंद्र के सभी राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवकों एवं युवा मंडल के सदस्य से इस अभियान को अग्रिम का सवरूप दें। जल संकट 21वीं सदी का सबसे बड़ा संकट है। जलस्रोतों के सभी उपयोग एवं जल संरक्षण एवं संयोजन समाज की सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए।

केंद्र के डिप्टी युवा अधिकारी रवि कुमार मिश्र ने बताया कि अभियान दो चरणों में चलता जाएगा। प्रथम चरण



रविश्वर को अभियान से संबंधित पोस्टर जारी करते डीडीसी व अन्य।

जनघरों में लोगों से मार्च मीने तक चलेगा। इसमें राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवकों एवं युवा मंडल के सदस्यों द्वारा नुककट माटन, संगीत, जलसंधार, प्रचार पैरी एवं सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों

में जल संरक्षण एवं संयोजन के प्रति जागरूकता बढ़ाना एवं जल का प्रयोग कम करना होगा। अभियान में वर्षा जल के संयोजन एवं उसके उपयोग के विषयों पर भी लोगों को जागरूक किया जाएगा।

NDRF team on Brahmaputra expedition reaches Sonitpur

Rekha Zaman | TNN

Guwahati: An NDRF team, which is undertaking the Brahmaputra Assam rain expedition, reached Sonitpur in Sonitpur district on Saturday.

The Brahmaputra Assam rain expedition, which is an initiative of the Centre and has been organized by the Brahmaputra Board (Ministry of Jal Shakti), is designed to be a public outreach initiative aimed at popularizing sustainable practices and river rejuvenation, primarily among the younger generation.

"The main objective of the Brahmaputra Assam rain expedition is to create awareness among the public about the importance of water conservation and the need for sustainable practices in water management," said NDRF team leader.



The team in Sonitpur on Saturday

and adventure spots, but a very important aspect is the scientific study which is happening alongside. This will help in acquiring a lot of important information about the river, the soil and other important factors," said Brahmaputra Board chairman Rajeev Jaiswal.

entire route of the expedition will also be conducted in collaboration with various technical institutes of the states.

A number of organisations associated with the Brahmaputra Assam rain expedition, like IIT-Guwahati and North Eastern Space Application Centre also took active part in the proceedings.

Assam chief minister declared said, "Brahmaputra is our culture, our economy and our identity. The Brahmaputra Assam rain expedition has been designed to understand the intricacies of living in the Brahmaputra basin. We must learn how to sustainably and mutually benefit from the resources that the mighty Brahmaputra has to offer. All the while respecting nature and making efforts to preserve it."

जल संरक्षण के लिए किए जा रहे कार्यों की समीक्षा

गुरुनगर/संवाददाता

लोक निर्माण विभाग गैरट हाउस के सभाघर में भारत सरकार जलसंधारण योजना के संघर्ष उपग्रह प्रसार के जनपद स्तरीय अंशों के साथ बैठक की। जल संरक्षण को लेकर किए जा रहे कार्यों की समीक्षा करते हुए अंशों की दिशा-निर्देश दिए।

सभाघर को आयोजित बैठक में बताया गया कि जल जीवन मिशन के अंतर्गत जनपद में 2 ग्रामीण पंचायत योजनाओं का निर्माण कराया जा रहा है। साथ ही पूर्व में निर्मित योजनाओं में तहत प्रतिगतर एक्स्पेंडिचर करने के लिए 66 ग्रामीण पंचायत योजनाओं में रेट्रोफिटिंग का कार्य कार्य की कराया जा रहा है। स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण के अंतर्गत ग्राम पंचायतों में बेसलॉइन सर्वे 2012 के अनुसार संचालन निर्माण के उपलब्ध

दिशा निर्देश

- लोक निर्माण विभाग गैरट हाउस के सभाघर में हुई बैठक
- ग्रामीण पंचायत योजनाओं का निर्माण कराया जा रहा है

तहत प्रतिगतर जाओ टेंगरे कराये जाने की समीक्षा करते दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने ग्राम पंचायतों में सार्वजनिक संचालन निर्माण कराये जाने की समीक्षा की। संचालन में जोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबन्धन को लेकर भी चर्चा की। बताया गया कि सिलाई गैरट मैनेजमेंट के अंतर्गत जनपद के सभाघरों में ट्रेड-टो-टो (कूड़ा कलेक्टर) का कार्य कराया जा रहा है। बैठक में डीएस रीजेंट कुमार, सीडीओ अधिष्ठाता राधेश, एटीएम प्रशासन राधेश कुमार रहे।



गुरुनगर में सभाघर को सिलाई गैरट हाउस में बैठक होते भारत सरकार जलसंधारण योजना के सचिव उपग्रह प्रसार सिंह। • विनय

जल संरक्षण को लेकर किया जागरूक कार्यक्रम

गुरुनगर। जल संरक्षण को लेकर बच्चों में जागरूकता लाने के उद्देश्य से राजकीय उच्च विद्यालय बुद्धेड़ा में जनस्वास्थ्य अभियंत्रिकी विभाग द्वारा जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें बच्चों को जल जीवन मिशन सहित जल के महत्व व संरक्षण को लेकर महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। सलाहकार संजय कुमार ने जल जीवन मिशन के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि भारत सरकार द्वारा वर्ष-2024 तक ग्रामीण क्षेत्र में जल जीवन मिशन के तहत हर घर को नल से जल देने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। जल जीवन मिशन के तहत हर घर को नल से जल देने का लक्ष्य रखा है।

Scripting a social revolution through water



BHATNAGAR LAL KATARIA
UNION MINISTER OF JAL, SANITATION,
SOCIAL JUSTICE & EMPLOYMENT

The daily schedule of my parents hinged on securing two square meals for their family. My father worked as a shoe-maker, while my mother toiled hard as a wage labourer. I remember her ordeal, walking tirelessly up to the designated well, each day, just to fetch drinking water. Her resolve to secure water for her children gave her the grit to brave all physical and social hardships she faced in the process.

I grew up in a small village in Haridwar. Being from a poor Dalit family, poverty and exclusion were the only flavour of life. The daily schedule of my parents hinged on securing two square meals for their family. My father worked as a shoe-maker, while my mother toiled hard as a wage labourer. I remember her ordeal, walking tirelessly up to the designated well, each day, just to fetch drinking water. Her resolve to secure water for her children gave her the grit to brave all physical and social hardships she faced in the process.

As a child, I distinctly remember my eagerness to listen to the Republic Day and Independence Day speeches. They offered the only ray of hope amidst the gloomy darkness of poverty. Each year, I would await an announcement on providing drinking water to our houses as I directly affected my mother and my family. Much to my amazement and disgust, the bottle promises were often made and then broken.

Later in life, I was fortunate enough to witness piped water connections in my village. But this time, the materialistic matrix dictated the esteemed beneficiaries. The poor and marginalised were again denied of their basic right to clean drinking water. Years passed and by 2019, we as a nation, could provide piped water supply to a mere 3.25 crore rural households out of a total of 18.85 crore.

It was after 72 years of Independence, in 2019, that from the precincts of the Red Fort, our Prime Minister



TACKLING CRISIS: Potable water to every rural household is the government's aim, ministers

Narendra Modi announced his resolve to provide piped water connections to every rural household under the government's flagship programme — Jal Jeevan Mission. Present at the Red Fort at that historic moment, my post flashed in front of my eyes. I remembered the words of Atal Bihari Vajpayee. In 1990, while on a visit to my village to perform the inauguration of my state, he turned piped water supply as a conduit to secure dignity of life for each household. That moment, I considered myself fortunate to serve in the newly formed Jal Shakti Ministry and work towards fulfilment of his vision. It was a god-sent opportunity and the entire team, led under the

dynamic leadership of our Prime Minister, is working tirelessly to accomplish the monumental task.

As we march towards Republic Day celebrations, instead of making tall promises, I seek to put forth an report card in public domain. In a short span of just one year, 3.04 crore households have been provided piped water connections as against the coverage of 3.25 crore households since Independence. Gas has emerged as the first state to achieve 100% coverage under JJM and as on date, 61 districts, 853 blocks, 32,894 gram panchayats and 75,888 villages have achieved the target of Har Ghar Jal. The drudgery of women and girls has reduced and

there has been an improvement in their "ease of living".

But there is something more significant that is happening as an inscription of this mission.

A water connection is being provided to one and all irrespective of caste, community, religion and race etc with an approach that "no one is left behind". Villages with a majority of SC/ST population are also considered as priority areas under the scheme which aims to secure 35 litres per capita per day (LPCD) of water. The social and inclusive approach is primarily benefiting the people from backward castes and is proving to be a silent revolution.

The mission mandates provisioning of water supply infrastructure on an unprecedented scale. It requires skilled manpower like plumbers, masons, electricians, fitters, pump operators etc., which shall be met by skilling people from the respective villages, thereby opening up vistas for their employment. So far, skill missions have tried to address the supply side constraints by imparting skill trainings. This mission shall address both the supply as well as demand side constraints by generating the demand for requisite skills in all the villages.

The entire mission follows a bottom-up approach. It requires formation of village water supply committees consisting members that shall prepare a village action plan for themselves. Interestingly, these committees

must have 30% women members since they are known to have a firsthand experience of problems faced on account of fetching water from a distance for day to day use. They are also known to be more efficient in the delivery of smooth operation of any scheme. Water and water are the very source of life. The mission seeks to leverage their innate potential and channelise it into a tool for their empowerment.

Lastly, information technology has been leveraged to collect and display nationwide data on portal, seweraj-shakti.gov.in, for ensuring real-time monitoring, transparency and public scrutiny. A Rashtriya Jal Jeevan Kosh (RJJK) has been set up for accepting donations/contributions from people who have moved from villages, but still nurture a love for their native place. Hence, they will be able to donate, at the click of the mouse, for specific water supply related works by interacting with the members of the local committee through this portal.

Hence, Jal Jeevan Mission is not merely a scheme. Its multi-dimensional impact on our society shall be positively etched in Indian history. Its outcome is not limited to the aggregate of connections provided. It is the resolve of Atmanushkar Bharat to address the long-standing need of providing potable water to every rural household by ushering in a social revolution characterised by people's participation, empowerment, convergence, inclusion and equity.

दून वैली पब्लिक स्कूल

दून वैली पब्लिक स्कूल हिमाचल प्रदेश के सोलन जिले में स्थित एक विद्यालय है जो बीते कई सालों से विद्यार्थियों को 'एप्लीकेशन बेस्ड लर्निंग' के माध्यम से जल संरक्षण की सीख दे रहा है। जल के महत्व से परिचित कराने और उपलब्ध जल को संरक्षित करने के अतिरिक्त यहाँ विद्यार्थियों को अपशिष्ट जल पुनर्प्रयोग और भूजल पुनर्भरण जैसे अहम विषयों पर भी व्यवहारिक ज्ञान प्रदान किया जाता है।

स्कूल की आधारभूत संरचना को केवल प्रौद्योगिकी ही नहीं बल्कि पर्यावरण संरक्षण की तकनीकों से भी लैस बनाने की कोशिश की गई है। स्कूल में वर्षा जल संचयन के लिए उत्तम प्रणाली विकसित की गई है जिसके तहत विद्यालय के परिसर में 30,000 लीटर क्षमता वाले एक टैंक में वर्षा जल संग्रहण किया जाता है। इस टैंक तक विद्यालय की छत और अन्य स्थानों से पाईप के माध्यम वर्षा जल एकत्रित कर के पहुंचाया जाता है। इसके अतिरिक्त हाथ धोते समय और पानी पीते समय व्यर्थ बह जाने वाले जल को भी टैंक में एकत्रित करने की व्यवस्था की गयी है। इस एकत्रित किए हुए जल को मुख्यतः बागबानी व सफाई संबंधित कार्यों के लिए प्रयोग में लाया जाता है।

विद्यालय द्वारा समय-समय पर कम्युनिटी आउटरीच प्रोग्राम के तहत विभिन्न जल निकायों की सफाई व उनके रखरखाव के अभियान भी चलाए जाते हैं। स्कूल के प्रयासों द्वारा 'रामशहर' नामक स्थान पर भी सफलतापूर्वक वर्षा जल संचयन प्रणाली विकसित की गई है। इसका मुख्य उद्देश्य भूजल पुनर्भरण कर के भूजल स्तर को बेहतर करना है। इस परियोजना के फलस्वरूप रामशहर का एक पुराना कुआँ पुनर्जीवित हो गया है।

इन सभी प्रयासों के अलावा विद्यालय में चित्रकला, निबन्ध लेखन, वाद-विवाद और विज्ञान प्रदर्शनी इत्यादि के रूप में भी जल जागरूकता बढ़ाई जाती है। इन सभी प्रतियोगिताओं का विषय भी जल संरक्षण से संबंधित ही होता है। इस तरह की गतिविधियों को आयोजित कराने का सबसे बड़ा लाभ यही है कि इनके माध्यम से विद्यार्थी अपने नवीन विचार रचनात्मक रूप से व्यक्त कर पाते हैं। स्कूल द्वारा आयोजित विज्ञान प्रदर्शनियों में विद्यार्थियों के कई अद्भुत विचार देखने को मिले हैं जिसमें से डाइनेमो-लेस इलेक्ट्रिसिटी और वाटर-बिन परियोजना सबसे दिलचस्प थी। विद्यार्थियों ने इन प्रोजेक्ट के साथ राष्ट्रीय स्तर की विज्ञान प्रदर्शनियों में भी भाग लिया।

दून वैली पब्लिक स्कूल ने पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में कई पुरस्कार अपने नाम दर्ज कराए हैं जिनमें से ग्रीन स्कूल और इको फ्रेंडली स्कूल इत्यादि जैसे अवार्ड सम्मिलित हैं। यह विद्यालय हमेशा प्रकृति और छात्रों के बीच सुसंगत संबंध विकसित करने का लक्ष्य रखता है जिसको ध्यान में रखते हुए ही विद्यालय को जल संपन्न और पॉलिथीन मुक्त परिसर बनाने के लिए

प्रयास किए जा रहे हैं। दून वैली पब्लिक स्कूल की ऐसी विभिन्न जल और पर्यावरण संरक्षण गतिविधियों में सकारात्मक भागीदारी पर्यावरण के प्रति उनके सकारात्मक दृष्टिकोण का प्रतीक है। इसी सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ यदि देश का प्रत्येक नागरिक जल संरक्षण करेगा तो कोई भी ऐसी ताकत नहीं होगी जो देश को जल समर्थ बनने से रोक पाए।





जल शक्ति मंत्रालय
जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग
भारत सरकार
MINISTRY OF JAL SHAKTI
DEPARTMENT OF WATER RESOURCES,
RIVER DEVELOPMENT & GANGA REJUVENATION
GOVERNMENT OF INDIA



save
water



Save Water Save Life

“Water Heroes - Share Your Stories 2.0”

FREE

ENTRY

Win Rs.10,000*

Ten Prizes

Be a Water Hero

**Share your success stories
in the field of water conservation**

BUMPER PRIZES

- TEN PRIZES OF RS- 10000/- EACH MONTH
- SHARE YOUR STORY IN MAX 300 WORDS
- SHARE YOUTUBE LINK OF YOUR VIDEO (1 TO 5 MINUTES)
- SHARE THE PICTURE OF YOUR WORK

Send your entries: waterheroes.cgwb@gmail.com

For Application

Log in to www.mygov.in

For more details

Visit www.mygov.in

www.jalshakti-dowr.gov.in

*T & C Applied.

#JanShakti4JalShakti

जल जीवन का अमृत

जल है प्रकृति की एक अमूल्य भेंट,
संरक्षण करो इस अमृत का, ना हो जाए लेट।

जिसने जल की महत्वता पहचानी,
वो है सबसे बड़ा ज्ञानी।

भारत ही है एक नगरी,
जहां पूजी जाती है जल भरी नदी।

अगर ना होगा जल,
तो होगा सुख का अंत।

चारों ओर होगा पतझड़,
ना दिखेगा फूलों से भरा बसंत।

जल है तो जीवन है,
इसलिए मत करो इसे बर्बाद।

जल जीवन का आधार है,
बात रखो यह मन में याद।

नमन पनपालिया

7 D

एमिटी इंटरनेशनल स्कूल, साकेत, नई दिल्ली

Share your suggestions & feedback at media-mowr@nic.in